आदमी
बैसाखी
पर

आदमी बैसाखी पर
यादवेन्द्र
शर्मा
चन्द्र

आदमी
बैसाखी
पर
यादवेन्द्र
शर्मा
चन्द्र

प्रकाशक सूर्य प्रकाशन मन्दिर बीकानेर
संस्करण १९७३
मूल्य छ रुपये
मुद्रक विकास आर्ट प्रिंटर्स शाहदरा दिल्ली ३२

AADAMI BAISAKHI PAR (Novel) Yadvendra Sharma Chandra
Prise Rs 6/

साहित्य सेवी
आदरणीय श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' को

श्री चन्द्र की अन्य रचनाएँ

- सावन ग्रांगा म
- एक रास्ता ग्रौर
- लाग का बयान
- य कया न्य (सम्पादित)
- ग्रपनी धरती ग्रापना त्याग
  —ग्रौर एक बहुत उपन्यास

हजार घाडा का मवार

मै इतना ही कहूगा

प्रस्तुत उपन्यास आदमी वसाखी पर व्यक्ति और उसके उत्तरदायित्व के बीच की स्थिति की सघपशील गाथा ह ।

आधुनिक परिवश व सन्दभ म इस उपन्यास के पात्रा की मन स्थितियो का अध्ययन आवश्यक है ।

एक युग पूव यह उपन्यास पथ की वशा के नाम स छपा था । अब य नय सशोधित रूप म प्रस्तुत है ।

—यादवेन्द्र शमा 'चन्द्र'

एक

उसके सामने एक कापी पडी है और कापी के पास एक दवात, जिसकी स्याही सूख गई थी जसे बहुत दिनो से इसका उपयोग नही हुआ है और यह केवल मेज की शोभा के लिए ही रखी हुई है। दो चार हिन्दी की पुस्तकें और दो चार अग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास बतरतीब पडे हुए थे। भूरे रग के टबल-क्लाथ पर कहा-कही हल्के स्याही के छोटे छोटे धब्बे थे, जो नये नही जान पडते थे।

कुछ देर तक वह बहुत जिम्मेदार राजनीतिक नेता की तरह गम्भीर मुद्रा बनाकर सामने पडे कागज पर आधुनिक प्रयोगवादी चित्रकारी का नमूना बनाता रहा। उसका शीर्षक दिया उसने—आलिंगन! फिर उसके होठो पर सूखी मुस्कान थिरक उठी, मानो वह अपने आपसे कह रहा हो वह भी क्या आत्मा है? एकदम अजीब!

फिर उसने अपने सिर को हथेली के सहारे टिका दिया और लिखने लगा जीवन=शून्य। आगे उसने लिखा नही। वस्तुत उससे लिखा नही गया।

वह कुछ देर तक विचारमग्न बैठा रहा। फिर उसकी कलम स्वत ही चली।

जीवन+पैसा=आनन्द।

जीवन—पैसा=समभदारी से जीवनयापन।

जीवन×पैसा=विलासमय जीवन।

जीवन—पैसा=दुख, चरम दुख और नीरसता।

और फिर उसने उन सबको काटकर बडे-बडे अक्षरो में लिखा, 'दु दु!'

अचानक उसके मानस-पटल पर एक युवती का चित्र उभर आया जो किसी शाइवर स्कूल में अध्यापिका थी और जो आजकल उसके आकर्षण की बिन्दु थी। उसने खिड़की की राह गगन नीलिमा को देखा और फिर मन ही मन कुछ बड़बड़ाता हुआ अपनी वागा नरर उठ खड़ा हुआ। तभी सामने के पत्तों पर उसकी बसागी की टर-टर उसके मन की व्यथा को साकार करती हुई उस सूने कमरे में गूँज उठी। टर-टर उस भाग्यहीन मनुष्य के जीवन की दुखभरी वह ध्वनि थी जो उसके अन्तरतम में प्रतिध्वनियों की भाँति टकरा टकराकर उसे पीड़ा पहुँचा रही थी। वह उदास-सा खिड़की का सहारा लेकर खड़ा हो गया। क्षण भर के लिए वह इतना गम्भीर हो गया कि उसकी भृकुटियाँ स्पष्ट तनी हुई जान पड़ीं फिर उसके चेहरे पर व्यथा के गहरे काले बादल छा गए। उसका मुख क्षण भर में एकदम पीला-पीला-सा जान पड़ा। उसने खिड़की के झूमते हैंडलूम के बने मारपंख पीले पर्दों को अपने दोनों हाथों से पकड़ा और बड़बड़ाया तमूरलंग!

आज नीराज रेस्त्राँ में नवोदित लेखक ने अनाम को तमूरलंग कह दिया था। अनाम ने उस लेखक की जिसका नाम निर्वाण था एक कहानी की कटु आलोचना किसी पत्र में छद्म नाम से लिखी थी। वह आलोचना इतनी द्वेषभरी और पक्षपातपूर्ण थी कि निर्वाण बात ही बात में बहुत नीचे स्तर पर उतर आया और उसने अनाम को एक वाहियात चित्रकार व घटिया कहानीकार बताते हुए तमूरलंग कह दिया। उस समय अनाम हँसता रहा ताकि रेस्त्राँ के बुद्धिजीवियों की उपस्थिति यह अनुभव न करे कि उसने इसे बुरा माना है लेकिन बाद में इस शब्द ने उसको मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाई और वह अब तक उसी तरह परेशान है।

अनाम बाबू! किसी लड़की का मृदु स्वर सुनाई पड़ा।

अनाम ने देखा—वरदा हाथ में चाय की प्याली लिए खड़ी है। अनाम

कृत्रिम मुस्कान होठों पर लाता हुआ बोला, चली ग्राग्रो वहां क्या खडी हो ?'

ग्राज ग्रापका मूड ग्रच्छा नहीं है न, इसलिए मैंने सोचा कि ग्रापसे ग्राज्ञा ले लूं। देखो न खिडकी का पर्दा कितना खराब हो गया है। ग्रौर सचमुच ग्रनाम ने देखा कि मुट्ठी में पर्दे के छोर के ग्रा जाने से उसमें काफी सलवटें पड गई हैं। वह पर्दा भीगे कपडे को फूहडता से निचोडा हुग्रा सा जान पडता है। उसने वरदा के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह वसाखी के सहारे मेज के पास बिछे पलंग पर ग्राकर बैठ गया ग्रौर चाय की चुस्कियां लेने लगा।

वरदा उसकी ग्रोर बिना देखे हुए उसकी पुस्तकों को उठाकर ग्रलमारी में रखने लगी। एकाएक वरदा ने पूछा, ग्रनाम बाबू, मनुष्य उदास क्यों हो जाता है ?'

जब तुम उदास हो तब उत्तर ढूंढ लेना।'

वरदा ने मौन धारण कर लिया ग्रौर ग्रनाम पलंग पर लेटकर सुप्रसिद्ध चित्रकार विन्सेण्ट वानगाग के जीवन पर ग्राधारित उपन्यास लस्ट फार लाइफ पढने लगा। कुछ देर तक दोनों एक दूसरे से नहीं बोले। फिर वरदा प्याला लेकर चली गई। उसके जाते ही ग्रनाम ने करवट लेते हुए कहा बेचारी!

वरदा—एक निम्न मध्य वर्ग की कुंवारी बंगालिन कन्या! काली पर जरा मांसल। इतने छोटे छोटे पांव, चीनियों की तरह जैसे वरदा के मां बाप ने भी उसे जन्मते ही लोहे के जूते पहना दिए हों। ग्रांखें बडी बडी, गहरी ग्रौर काली। बाल श्यामल घटाग्रों की तरह घने ग्रौर काले ग्रौर उसकी कमर के नीचे तक फैले हुए। ग्राठवीं में पढती थी। उम्र चौदह पंद्रह पर शरीर का फैलाव पूर्ण युवती का सा। विवाह के योग्य।

ग्रनाम के नीचे के दो कमरों के फ्लैट में वह रहती थी। बाप सरकारी

अभी तक अनाम न वरदा की ओर नहीं देखा था। वह उपेक्षा वरदा को बुरी लग रही थी। यह व्यवहार अशिष्टता का भी सूचक है ऐसा वरदा ने मन ही मन सोचा और वह कुछ अवश सी बोली फिर आपने चलने का वचन क्या दिया था ?

पर वचन को तोडा भी जा सकता है।

अभिजात वर्ग की सजी सजाई महिला की प्रदर्शन भावना लिए वरदा चाहती थी कि अनाम उसे देखे पल भर के लिए देखे ताकि वह गर्व कर अपने मन को तुष्ट कर पर अनाम द्वारा निरन्तर उपेक्षा पाकर उसका अहंकार तडप उठा। वह तनिक रोष म बोली तुम्हारे वचनों का क्या मान ? तुम दूसरों की इच्छा को इच्छा नहीं समझते इतना दम्भ अच्छा नहीं ।

अनाम तुरन्त पलग पर बैठ गया। उसने वरदा की ओर देखा। नज़रें चार हुई। दोनों ने अनिमेष दृष्टि से कुछ क्षण के लिए एक दूसरे को देखा। वरदा अपनी धोती का पल्लू अपनी अगुली के चारों ओर लिपटाने लगी और अनाम के चेहरे पर समझौता सूचक हसी नाच उठी। वह शान्त स्वर मे बोला मुझे मेरे एक मित्र के घर जाना है उसकी पत्नी अस्वस्थ है। वरदा ! वहा नहीं जाऊगा तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।

वरदा के आखें भर आयी वह आखो को पोछती हुई कोमल स्वर म बोली अनाम बाबू आप अपने मित्र के पास अवश्य जाइए लेकिन इन्दु दीदी के यहा नही। यह इन्दु दीदी मुझे अच्छी नहीं लगती।

और वह हवा की तरह बाहर चली गई।

उसके जाने के बाद अनाम नारी की स्वाभाविक ईर्ष्या को देखकर गभीर हो गया। फिर वह वरदा के अधिकारपूर्ण वाक्य को लेकर कई बार सोचता विचारता रहा और बाद म उसने निर्णय निकाला कि वरदा उसे प्रेम करती है वह उसपर अपना कुछ अधिकार समझती है तभी वह उसे

ऐसी आशा द सकती है। तभी वह उसस ऐसा हठ कर सकती है।

पाच बज चुक थ।

मई की उष्णता और जयपुर की भीषण गर्मी। न चाहते हुए भी उसने नई पोशाक पहनी। कुता और पायजामा। पावा म जाधपुर की हल्की जूती। जेब म बलिको मिल का रगीन रुमाल।

मज की दराज म स उसने एक बटुआ निकाला। बटए का रग काला था और वह किसी प्रम की भट थी और तभी सठ रणछोड की हवेली का नक्शा उसके मस्तिष्क म घूम गया। उसने तुरत अपने कमरे की खिडकिया बन्द की और पखे का स्विच आफ किया और चल पडा।

सीढ़ियो क बीच वरदा मिल गई। उसकी आखो म करुणा और निवा-सन दोना था। अनाम ने प्रश्नभरी दृष्टि स उस दखा। उसके भावो को सम-भती हुई वरदा बोली आपकी विवशता मैं जानती हू अनाम बाबू लकिन यदि आप साथ होत तो हम बडा आनद आता। मा भी यही चाहती थी। सम्भव हो सके तो आन का कष्ट करिएगा हम प्रम प्रकाश म जा रह ह हिन्दी फिल्म देखने।

अनाम कुछ कह उसक पहल वह पुन बोली आप बस म जाएग या ताग म।

जो मिल जाएगा उसीमे चला जाऊगा।

बस जब रुक जाए तब उसम बठिएगा। वरदा की करुणा भरी दृष्टि अनाम के भग्न हुए पाव पर जम गई।

अनाम उस दृष्टि को नही सह सका। उसके मन म हजारो बिच्छुओ के डक की पीडा का सचरण हो उठा। उसने आवेश म तुरत सोचा कि क्या वह यह कहना चाहती थी कि आप लगड हैं उतावली म गिर जाएग।

ओह ! दया कर रही है। उसके प्रशस्त ललाट पर स्वद कण उभर आए। उसका निचला होठ ऊपर क दो दातो स दब गया। भगिमा म कुछ कठो-

रता और भयानक प्रतीत हुइ। वरदा स्थिरता से सहम गई और कुछ उसकी आतरिक भावना का समभती हुई वह शीघ्रता स चली गई।

उसके जाते ही अनाम न अपन आपका समाला। अपने आवेश और रोष पर काबू किया। रुमाल स चेहरा पाछा और चल पडा। बसाखी की खट-खट उसे अपने हृदय पर पड रही हथौड की चोटें-सी प्रतीत हुइ।

घर स बाहर निकलकर उसने साधारण व्यक्ति की चाल से अधिक तजी म चलना शुरु किया जस वह सोच रहा हा कि खिडकी म खडी वह काली-कलूटी वरदा उसक बारे म सोच ले कि वह कितना तज चल सकता है? हालाकि बस स्टापज तक उसन पीछे मुडकर दखा भी नही फिर भी वह कल्पना म साहमी पुरुषा की भाति एमा विचार रहा था कि वरदा उसे खिडकी की राह देख रही है। इसलिए वह बस म सबस पहल लपककर चढा। इमस अनाम की आत्मा का बडा सताप हुआ।

बस म भीड थी। सीटें खचाखच भरी थी। अपनी बसाखी का बगल मे दबाता हुआ वह एक सीट का पकडकर खडा हो गया। अचानक सीट पर बठे हुए महाशय की दृष्टि अनाम पर पडी। वह तुरत उठ खडा हुआ। उसने अनाम का कहा वठिए।

नहीं-नहीं आप वठिए न?' अनाम न उन्हें रोका।

नहीं साहब मैं खडा हो जाऊगा। आपको तकलीफ होगी।' उसके मुख पर करुणा क भाव थे।

अनाम विवश होकर बठ गया। उस समय उसका चेहरा सकोच स झुक गया था।

तुम्हारी सहेलिया न उस पसन्द किया ह ?

दो-तीन सहेलिया इस बीच आ गई थी उन्हाने इसे खूब पसन्द किया। लेकिन मुझे तुमसे थाडी-सी शिकायत ह। उसके स्वर म अदाज भर आया। अनाम ने जान बूझकर अपनी मुद्रा का गम्भीर बनान की चेष्टा की। उसने चाय बनाकर इन्दु के आगे रख दी।

चाय का घूट लेकर इदु प्याले पर अपनी दष्टि जमाकर बाली 'मैंने अपनी लिखी कहानी पढा पढकर आश्चय हुआ, तुमने उस इतना क्या बदल दिया ? उस कहानी पर तुम्हारी चित्रकारी का प्रभाव स्पष्ट बालता ह। तुम्हार मित्र तुरन्त जान जाएग कि यह कहानी इन्दु की नहा अनाम की लिखी हुई ह और फिर व मुझ और तुम्ह लेकर न जान क्या-क्या सोचेंगे।'

क्या-क्या साचग ? अनाम के सूख हृदय म प्यार का झरना-सा फूट पडा। दष्टि म चुहलबाजी उतर आइ।

वस !' उसन कृत्रिम राष स बात खत्म करन का आज्ञा दी। दाना कुछ दर तक शात रह जस दाना पत्थर या मिट्टी के बने खिलौने हा जा सजावट के तौर पर लगा दिए गए हा। दाना ने चाय तक पीनी बन्द कर रखी थी।

अचानक इदु बाली तुम्हार मित्र वकील साहब नही आय ?

बस आते ही हाग।

'उनका स्वभाव कसा ह ?

वसे व बहुत अच्छे आदमी है किन्तु कजूस है। हृदय के पत्थर और एकदम नीरस। एक चरित्र कहानी के लिए।'

फिर एसे आदमी से मिलने से क्या लाभ ?'

उनकी यहा के बडे-बड सठा म पहुच है। यदि उन्ह हम राजी करने मे सफल हो गए तो तुम्हारा पहला कहानी-सग्रह छपा ही समझो।

इन्दु न भावावेश म अनाम का हाथ दबा लिया। अपने चेहरे का चम-

मत गाढ़ म ल्पती हुई कामन स्वर म बोली तुमने मर जीवन का वल्ल दिया। क्या थी क्या बना दिया ? मैं प्राय सोचा करती थी कि मैं एक एसी स्त्री बनू जिसका स्व समाज व स्व समाज क बाहर प्रतिष्ठित नागरिकों और बुद्धिजीवियों म सम्मान हो। ग्राज मुझ ग्रानन्द की दृष्टि स देख और ग्रब मुझ विश्वास हो रहा है कि मेरी इच्छा ग्रवश्य पूरी होगी।

ग्रनाम न बडी शान्ति म उत्तर दिया मैं ग्रपनी ग्रोर म तुम्हें सब तरह की मदद दूगा।

तुम्हारा ही यह प्रताप है कि मैं ग्राज कुछ बन रही हू।

वकील दयाल ग्रा गय। ग्रनाम न उस देखत ही उठन का प्रयास किया। दयाल न तुरन्त उसक कध पर हाथ रखकर कहा बठिए-बठिए तकल्लुफ की जरूरत नहीं ग्रापको उठन म कष्ट होगा।

ग्रनाम का मुह उतर गया। वस्तुत ग्रपन पर प्रदर्शित किए गए दया के भाव उस ग्रच्छे नहीं लगत थ। दूसरों की दया उसक लिए ग्रसह्य हो उठती थी। उसन गहरी चुप्पी साध ली।

दयाल निर्विकार भाव स मुस्करा रहा था। ग्रनाम की गहरी मूकता का उसपर कोई प्रभाव नहीं पडा। वह उसक कध पर जोर की थापी देकर बोला ग्रनाम ग्रापस परिचय नहीं कराग्रोग ?

ग्राप है इन्दु जी यहां प्राइवट स्कूल म टीचर है और हिन्दी की नवा-दित तरुण लेखिका भी हैं। ग्रापन इनकी कहानियां पढ़ी होगी।

दयाल ने कुटिलता से मुस्कराकर कहा बस मैं कहानियां नहीं पढ़ता पढ़ने का प्रश्न ही नहीं उठता फुसत ही नहीं मिलती लेकिन ग्राज मैंन इनकी एक कहानी धमयुग म पढी। द्रौपदी का वरण लिलाप प्राचीन कथानक को ग्राज की समस्याग्रों म घटित करना बहुत कठिन है। मैं उस कला का एक सुदर नमूना मानता हू।

क्या ग्रापको मेरी कहानी पसद ग्राई ?'' इन्दु ने ग्रपनी झुकी हुई दृष्टि

तनिक उठाकर पूछा।

पसद ग्रजी बहुत ! ग्राधुनिक द्रौपदी की दशा और उसका चित्रण पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली कि मुझे ग्रब हिन्दी की कहानिया और उपन्यास पढ़न चाहिए। लेकिन मैं जानता हू कि यह सब मानकर भी मैं कुछ नहा पढ़ पाऊगा। ग्रपन धधे स मुझे फुर्सत नहा। मैं एक पल क लिए भी मुक्त नहा हू।

इधर इ दु की ग्राखा म गव चमक उठा। ग्रनाम न ग्रब चुप रहना उचित नहीं समझा। दयाल की मुक्त कठ स की गई प्रशसा इन्दु पर प्रभाव करती जा रही थी।

वकील साहब इनका कमाल ता कहानी का मोड देन म है। महाभारत की द्रौपदी हर पति को सम्पूर्ण नारीत्व क साथ ग्रात्मसमर्पण किया करती थी और इनकी द्रौपदी विवशता और भय स ग्रपन ग्रापका उन पाच लालुप भडिया का सौंप दिया करती थी। य भडिए ग्रपन भाग विलास की तप्ति क साधन के रूप म उस ग्रथ प ित नारी का उपयाग करत थ। यह जीवन की कितनी भयानक ट्रेजडी है। उसन बैरे पर दष्टि जमाकर कहा ग्राप ता काफी पीत हैं न वकील साहब ?

केवल काफी नहा ग्रनाम काफी क साथ कुछ खान को भी चाहिए।

वह भी मिलेगा।

तभी रस्त्रा म दा एग्लो इण्डियन युवतिया न प्रवश किया। व गारी दुबली-पतली युवतिया ग्रग्रेजी म बोलती हुई सभी कुर्सिया पर नजर फकती हुई एक कान की मेज पर जाकर बठ गई।

इन्दु ने तपाक से कहा इस बार मैं एग्लो इण्डियन समाज पर लिखना चाहता हू। इनके जीवन और मन म बडी ग्रथिया है। नियमित रूप स ईसा प्रभु के चरणा म गिरकर ग्रपने ग्रपराधा के लिए क्षमायाचना करना और उसी गति स ग्रपन निजी ग्रपराधो म वद्धि करना, य दो विराधी बातें

दयाल जा ! अनाम तनिक आवेश म आ गया। उस दयाल का यह व्यवहार जरा भी रुचिकर नही लगा। इन्दु के सामन उस अपमानित करन का उसका क्या उद्देश्य हो सकता है ? वह समझ नही सका।

अनाम न कहा फिर मैं कोई अन्य उपाय ढूंढूंगा। मुझे इन्दु जी का कहानी-संग्रह छपवाना ही है। आप नही जानत, बुद्धि का समुचित विकास और प्रोत्साहन न मिलन स वह कुण्ठित हो जाती है।

दयाल लापरवाही से उठ गया अच्छा अनाम ! और देखिए इन्दु जी आप बुरा न मान मैं रुपया अपनी तिजोरी से निकाल नही सकता हूं। रुपया मेरी आत्मा है परमात्मा है। सच कहूं परमात्मा स भी बढकर है।

दयाल इस तरह चला गया जस उसन यहा आकर अपना समय ही खराब किया।

इन्दु न घृणा स मुह सिकोडकर कहा आपके बहुत अच्छे मित्र है ! मैं कहती हू कि ऐस मित्रो से मित्रता रखना क्या जरूरी है ?

अनाम न करुण स्वर म कहा प्राणी का मूल्यांकन परीक्षा म ही होता है। लेकिन तुम चिन्ता न करो म सब ठीक कर लूगा। सब ठीक कर लूगा। चलो। यदि यह चाहता तो अपना काम बनवा सकता था।

इसके बाद व दोनो बाहर निकल।

अनाम की बसाखी की खट-खट उस कोलाहल म अपना पृथक अस्तित्व रखती हुई सबको स्पष्ट सुनाई पड रही थी।

तीन

दयाल के चरित्र के बारे म एक ही वाक्य कहना अधिक उचित होगा कि वह कनी हुई अगुली पर पेशाब तक नही करता था। केवल धन-संग्रह और उसकी वृद्धि के अतिरिक्त उसके मन म दूसरी बात नही आती थी।

'दूसरी कहा मिलती है ? वस्तुत बात कुछ और ही थी। यह नौकरानी जितनी मस्ती थी, उतनी सस्ती नौकरानी ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकती। फिर भला दयाल उसे कैसे निकालता ? वह अपनी पत्नी के लिए रद्दी से रद्दी फल लाया करता था। जब एक दिन विद्या ने रोष में कहा तब उस निर्मोही ने अपनी आखें मिचमिचाकर कहा यह रोग आदमी का क्षय करके ही रहता है। व्यर्थ मे रुपया बरबाद करने की क्या जरूरत है ?'

विद्या पर पहाड़ टूट पड़ा। उसने अपनी भयाक्रान्त दीप्तिहीन आखों से अपने पति की ओर देखा फिर मुझे यहा से चला ही जाना चाहिए। मेरा क्षय निश्चित है फिर जीवन के प्रति सम्मोह कैसा ? तब विद्या के चेहरे पर भयानक छायाए डोल उठी 'तुम मुझे जहर लाकर क्यो नही मार देते ? तुम मुझे व्यर्थ ही क्यो तड़पा रहे हो ? जाओ तुम मुझे जहर लाकर दे दो।

दयाल पत्थर की मूर्ति की तरह अचल खड़ा रहा।

'ईश्वर तुम्हे सद्बुद्धि दें। यह रुपया कुछ काम नही आएगा। आपको इतना धनलोलुप और हृदयहीन नही होना चाहिए।

दयाल ने दृढ़ता से विद्या की ओर देखकर कहा अभी तुम जीवन की गहराई का ज्ञान नहीं। पैसा कितने महत्त्व की चीज है इसे मैं ही जान सकता हू। फिर यह सरासर मूर्खता है कि हम उस वस्तु को बचाने के लिए अपने धन का अपव्यय करें जिसका विनाश निश्चित है।

विद्या अपने पति का उत्तर सुनकर उन्मादित हो उठी ओह ! यदि कोई मेरा कलेजा निकाल लेता तो भी मुझे इतनी पीड़ा नही होती जितनी तुम्हारे इस वाक्य से हुई है। पता नही तुम्हे क्या हो गया है ? तुम इतने पत्थर क्यो गए हो ?

वह बिलकुल साधारण स्थिति मे बोला मुझे कुछ नही हुआ मैं बिलकुल ठीक हू। तुम्हे धैर्य रखना चाहिए और मेरी बात को समझने की कोशिश

बारा, तुम्हारी कितने दिन की तनख्वा बाकी है ?

दो माह की।

'इस बीच तुमने क्या-क्या नुकसान किया ?

वकील साहब इस बीच मेरे हाथ से सिर्फ एक कांच का गिलास टूटा।'

सिर्फ एक ही ?'

हां साहब!

आठ आने कम हो गए।'

लेकिन सरकार कांच का गिलास छह आने में खुला बिकता है।

नया बिकता है जानती हो नया गिलास बराबर होता है। उसके चलन की कोई गारंटी नहीं। मेरा छह माह का पुराना गिलास था और यदि तू नहीं तोडती तो वह कभी नहीं टूटता।

बचारा नौकरानी चुप हो गई। दयाल ने अपनी सफाचट मूछों पर अंगुलियां को नचाकर कहा आज से मैं तुम्हें छुट्टी देता हूं। पंद्रह रुपया माहवार मुझे बहुत लगता है। मैंने अपने पड़ोसी की नौकरानी से बात-चीत कर ली है वह पांच रुपया में घर की सफाई और बरतन साफ करने को तयार है।

पांच रुपया में हो !' नौकरानी ने विस्मय से कहा।

मेरे ख्याल में वह भी अधिक है। एक आदमी के बरतन अधिक नहीं होते। दो पतीले भगोनाई कि उसका काम समाप्त।

नौकरानी जलती हुई अपने रुपये लेकर चली गई।

कुछ दिनों में विद्या की मां की देहांत हो गया। दयाल ने उसके लिए आंसू बहाए सच्चे या झूठे यह कोई नहीं जान सका। उसने उसके पीछे ग्यारह ब्राह्मण भी जिमाए। कुछ दान धर्म भी किया लेकिन उसके जीवन

की गति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया।

बाद में दयाल ने इन्कम टैक्स आफीसर से मिलकर और रुपये कमाए। कुल मिलाकर उसके पास तीन लाख के करीब रुपये हो गए। उसने अपने व्यक्तिगत लाभ के पीछे राष्ट्र का भारी नुकसान किया। वह सेठ और आफीसर से मिलकर लाखों का मामला हजारों में तय करवा देता था।

अधिक रुपया आने के बाद उसका मन इस पेशे के प्रति ऊब-सा गया।

नया इन्कम टैक्स आफीसर दयाल के हर मामले को बिगाड़ने का प्रयास करता था। निदान दयाल एक वकील से एक अच्छा पठान हो गया। वह औरों को रुपया उधार देने लगा। पांच सौ का सात सौ लिखवाना पांच-पांच रुपया सैकड़ा ब्याज लेना हजार की चीज पर पांच सौ रुपया देना यही था उसका धंधा! यही उसका व्यापार। फिर भी वह नियमित रूप से कुछ देर के लिए काला कोट पहनकर कचहरी जरूर जाता था।

इसीमें उसको महान संताप और सुख मिलता था।

दयाल की मित्रता अनाम से भी विचित्र ढंग से हुई। अनाम को कुछ रुपयों की आवश्यकता थी किसीने उसे बताया तो वह उसके पास गया। दयाल ने एक अपरिचित की निर्भयता से उधार मांगते देखकर उसमें कुछ प्रभावित हुआ। उसके व्यवसाय को पूछा। उत्तर पाकर वह बोला आप चित्रकार और लेखक हैं वह तो कमाऊ नहीं! क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपकी मासिक आय कितनी है?

यही होगा पन्द्रह सौ रुपया।

'सिर्फ पन्द्रह सौ रुपया! और आप मुझसे इतनी बड़ी रकम अर्थात दो हजार रुपये मांगने आ गए?' उसका स्वर आश्चर्य में डूबा हुआ था।

देखिए मेरी बड़ी बहिन निर्मला का विवाह है मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। मैं आपके पास बड़ी आशा लेकर आया हूं। अनाम ने शालीनता

न कहा।

मक्त जसी शब्दावली भगवान के सामने अच्छी लगती। मैं एक सूत्र-धार हू मेरा काम एक चिकित्सक से भी अधिक चतुराई का है। चिकित्सक अपने प्रयोजन की चीज की ही जाच-पडताल करता है पर मुझे अपने मुवक्किल के हर पहलू को देखना होता है। मेरी यह पनी दृष्टि मनुष्य के अन्तमन की प्रत्येक गतिविधि को तुरन्त भाप लेती है।

मुझे रणछोड बाबू ने आपके बारे मे बताया था। वे आपकी प्रशसा करते थे। वे आपको बहुत उदार बताते थे।

मेरी प्रशसा मेरे हृदय मे दया जगाने मे सवथा असमथ रही है। मैं एक सूत्रधार हू जिसका धम सत्य और ईश्वर है—क्षमा। हालाकि मैं ईश्वर की पूजा करता हू। मेरी रसोई मे जिसे मैंने आजकल मन्दिर बना दिया है भगवान शिव का एक छोटा-सा लिंग है। हर रोज सवेरे मैं उसकी पूजा करता हू ताकि मेरी आत्मा दुबल न हो। वह कुछ रुक गया। उसकी दृष्टि अपने कान पुराने कोट पर जम गई जिसकी गदन पर तेल की चिकनाहट चमक रही थी।

लेकिन मेरा काम आपको करना ही होगा। अनाम ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा। फिर वह मैली चटाई को अपनी अगुली से कुरेदने लगा।

तीन हजार की जमानत दिला दो।

किसकी ?

रणछोड बाबू की। वे जमानत दे देंगे मैं रुपया दे दूगा।

वे अभी कष्ट मे है। उन्हे आपसे भय है कि कही वक्त पर रुपया न पहुचा तो आप उनपर तुरत नालिश कर देंगे। आप उनकी इज्जत धूल मे मिला देंगे।

दयाल अट्टहास कर उठा। उसकी जगनिया जसी भयानक हसी ने

अनाम को भयभीत कर दिया। वह नादान बालक की भांति दयाल को देखने लगा।

'जब रणछोड बाबू जिनके पास लाखों रुपये हैं तुम्हें नहीं दे सकते तब मैं तुम्हें रुपया कैसे लाल सकता हूँ ?

नकिन व लेन देन का व्यापार नहीं करते।

तुम भोले हो पैसे वालों की अक्लमन्दियों को नहीं जानते। वे तुम्हें रुपया नहीं देंगे। वे तुम्हारी जमानत नहीं देंगे। क्योंकि तुम एक गरीब चित्रकार नवक हो जिसकी आय का कोई भरोसा नहीं। तुम नहीं जानते कि हर रुपया देने वाला आदमी अपना आसामी की औकात देखता है। अनाम बाबू कुछ गिरवी रखने को है ? और उसकी दृष्टि अनाम के चेहरे पर जम गई।

कुछ नहीं। अधिक-से अधिक मैं अपने आपको गिरवी रख सकता हूँ। हां यदि आप मेरे कुछ चित्रों को रखना चाहें तो खुशी-खुशी रख सकते हैं। उसकी वाणी में व्यथा लहरा उठी। आंखों में करुणा चमक उठी।

इस तरह बात नहीं बनेगी। मैं पैसा जिस मैं अपनी आत्मा मानता हूँ उसे निराश कर नहीं सकता। उसकी सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए।

मैं आपके पांव पड़ता हूँ।

यह अभिनय व्यर्थ जाएगा। मैं अपने रुपयों की जमानत चाहता हूँ। वगना साधारण पार्टी का मकान भी गिरवी नहीं रखता क्योंकि उस मकान प यामन मालगर लागर हो सकता है। नकिन वह उसका पचास हजार रुपया नहीं रोक सकता नवाब नहीं लाता। इसके साथ यदि मैं उस आज धरता नहीं तो वह तुरन्त नहीं लिखेगा। इसलिए मैं सोना चाहता हूँ जवर चाहता हूँ। सोना एक ऐसी धातु है जो हर भी तुरन्त बिक सकता है। बस एक अन्य कुछ रहा नकिन बनारसी इन व्यापारियों से कुछ

ईमानदार होते हैं। अब मैं तुम्हें मकान पर भी रुपया दे सकता हूं बशर्ते मकान की कीमत पांच हजार हो।

मैंने आपसे कहा न मेरे पास कुछ नहीं है।

फिर मुझे क्षमा करना मैं आपकी कोई भी सेवा नहीं कर सकूंगा।

अनाम का हृदय दयाल के प्रति घृणा से भर उठा। उसे यहां तक गुस्सा आया कि वह उसके मुंह पर थूक दे पर वह इतना साहस नहीं कर सका। टूटा-टूटा-सा उठा और चल पड़ा। अभी वह दरवाज़े तक पहुंचा ही नहीं था कि दयाल ने उसे फिर पुकारा सुनो।

अनाम के तन मन से खुशी की लहर दौड़ गई।

मैं तुम्हें पांच सौ रुपया दे सकता हूं किन्तु एक शर्त पर।

अनाम बसाखी को मजबूती से बगल में दबाकर जल्दी जल्दी दयाल के पास आया। उतावली से बोला मुझे आपकी हर संभव शर्त मंजूर है।

तुम्हारे जो भी चित्र बिकेंगे उन सब पर कापी राइट मेरा होगा उन्हें मैं ही बेच सकूंगा। अपना सारा रुपया पहले मैं लूंगा।

मुझे मंजूर है।

फिर कल आ जाना मैं कागज बनवा कर रखूंगा दस्तखत करके अपना रकम ले जाना। वह इस तरह बोल रहा था जैसे कोई उपेक्षा से बात कर रहा हो।

दूसरे दिन अनाम ने जब दयाल के घर में प्रवेश किया तब दयाल एक साधारण युवती को कर्ज दे रहा था। बसाखी की खट-खट' सुनकर दयाल भीतर से बोला अनाम बाबू वहीं पर रुक जाइए।'

अनाम एक टूटी-सी कुर्सी पर बैठ गया। कुर्सी की पीठ से लगी दीवार इतनी गन्दी थी कि अनाम को घृणा हो उठी। एक छींके में कुछ सड़े हुए फल पड़े थे। वह इस कंजूस पर गंभीरता से विचारता रहा जिसमें पैसा का सम्मोह था। जो रात दिन औरों की दौलत को अपने घर में देखना

चाहता था। जिसका इस जीवन में न कोई दोस्त था और न कोई अपना। सरसता से उसे चिढ़ थी। वह कभी भी जीवन की कोमल भावनाओं या नारी के प्रणय पक्ष को लेकर चर्चा नहीं करता था। दयाल का यदि सर्वाधिक प्रिय विषय कोई था तो वह था ऋण देना। वह ऋण को लेकर घंटों विचारा करता था। किस प्रकार किसी को सौ रुपया देकर एक हजार वसूल करने चाहिए—इसमें वह अपनी बुद्धि का कौशल बताया करता था। बस वह कसाई की छुरी से अधिक निर्दय और पत्थर से भी अधिक कठोर था। किंतु वचनों का बहुत पक्का था। जो कह दिया उसे वह पूरा करता ही था। चेहरे पर किसी प्रकार के भाव लाए बिना वह अपने मुवक्किलों (कर्जदारों को वह इसी तरह से सम्बोधन करता था) के मकान कुर्क करवा लेता था उनका सामान कब्जे में कर लेता था या उन्हें जेल भिजवा देता था। इस मामले में वह थोड़ा भी उदार नहीं था।

अनाम! भीतर से दयाल ने पुकारा। अनाम की बसाखी की खट-खट गूंज उठी। वह भावाद्वलित-सा उस कमरे में घुसा जिसमें चटाई बिछी हुई थी। जिसमें एक पतली-लम्बी युवती बैठी हुई थी। अनाम का ध्यान उस युवती की ओर गया। दयाल हंसकर बोला यह अनामिका है दासी कुछ कर्ज लेने आई है। तुम्हारी और इसकी स्थिति एक-सी है। यह अपने मालिक को एक हजार रुपया देकर उसकी गुलामी से मुक्त होना चाहती है। बेचारी छोटी जात की है।

अनाम ने मन-ही मन सोचा उसकी गुलामी से तुम जैसे आदमी की गुलामी बहुत भयानक है। भगवान इसकी रक्षा करे।

तुम चुप क्यों हो! दयाल ने पूछा।

मैं सोच रहा था कि आप कितने दयालु हैं।

वह जोर से हंसा आदमी झूठी प्रशंसा करने में माहिर होता है। अनामिका तुम बाहर बैठो।

इसके बाद दयाल ने गहरा मौन धारण कर लिया। वह गहरा मौन अनाम के लिए असह्य हो उठा। दयाल ने अपने काले कोट की जेब से कागज निकाला और अनाम को हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

अनाम ने हस्ताक्षर करने के पूर्व व्याज के कागजों को देखना चाहा। पर वह तनिक स्तम्भित-सा हुआ। बोला, 'तीन रुपया प्रति सैकड़ा ब्याज !'

'किसी वस्तु के अभाव में यह कुछ भी नहीं है। मैं यह रुपया केवल ब्याज के मोह में दे रहा हूं। कभी-कभी हम सूदखोर ब्याज के मोह में मूल को मिट्टी बना देते हैं अर्थात् एक भी रुपया वापस नहीं मिलता।'

'लेकिन यह ब्याज साहूकारी नहीं है।' अनाम के स्वर में शिकायत सी थी।

'साहूकार का एक तो अपनी इज्जत का भय सदा बना रहता है। दूसरा उसका मेरे पास कुछ-न-कुछ गिरवी होना ही है। तुम्हारे पास क्या है? कुछ भी नहीं! एक गरीब चित्रकार और लेखक हो। न मकान है और न सोना! निरे फकीर। बाप भी है वह भी बीमार। पांच-पांच और छह-छह बहिनें, तुम स्वयं लंगड़े। कभी सोचा है तुमने कि तुम्हारी कला अजेय होती है। वह साधारण व्यक्ति की समझ में नहीं आती। एकदम विचित्र, एकदम नई। कौन खरीदेगा उसे? मुझे तुमपर दया आती है।'

अनाम को अपनी निन्दा असह्य लगी। कहा वह उत्तेजित हो गया तो बना-बनाया काम बिगड़ जाएगा। इसलिए उसने तुरन्त हस्ताक्षर किए और बसाखी को बगल में दबाकर जल्दी से वहां से निकलना चाहा लेकिन दयाल ने उसे रोक दिया, 'रुपया नहीं लोगे?' वह बाहर बैठ गया। अनामिका भीतर आई। दयाल ने उससे पूछा, 'तुम काम करना चाहती हो?'

'हां।'

'कितनी तनखा लोगी?'

'रोटी कपड़ा और तीस रुपया!'

दयाल ने अनाम से कहा, तुम्हें एक नौकरानी की जरूरत है ? है क्या हागी ही। यदि मेरी बात मानना चाहते हो तो अनामिका को रख लो तुम्हारा सब काम कर देगी रोटी-कपडा और दस रुपया नकद। बोलो मजूर है !

हा मजूर।

फिर लो रुपये। उसने सौ-सौ के पाच बहुत पुराने नोट निकालकर अनाम को दिए। अनाम आभार प्रदर्शन करता हुआ चला गया। अनामिका दयार्द्र दृष्टि से अनाम को देखती रही। उसके अंतस में इस तरुण के प्रति दया की किरण फूट पडी। अचानक उसके मुह से निकल पडा बेचारा कितना सुन्दर है मार की तरह उसके पाव में प्रभु ने कसर रख दी।

दयाल ने कुटिल हसी हसकर कहा अनामिका तुम्हारा नाम तुमसे मिलता जुलता-सा है। सुना यह है अनाम का पता। उसने एक कागज अनामिका के हाथ में दिया। फिर ठहरकर वह बोला तुम्हें एक हजार रुपया ढेढ रुपया ब्याज पर दिया है। इसलिए हर सवेरे तुम्हें मेरा काम मुफ्त में करना होगा। चकि तुम एक गरीब लडकी हो इसलिए तुम मुझे ब्याज नहीं दे सकोगी मैंने उसका भी प्रबन्ध कर लिया है। जसे ही तुम्हें अनाम तनखा दे बस हा तुम मुझे पन्द्रह रुपया पहुचा देना। याद रखना एक सूदखोर ब्याज के मामले में बहुत ही घटिया होता है।

अनामिका ने हाथ जोडकर कहा, मैं स्त्री हूं मुझे मेरा अपने पुराने मालिक से भय बना रहता था वह मनुष्य मेरे तन और मन से खेलता था फिर भी मैं उसे कुछ नहीं कहती थी। मैं दिन भर कामकाज में लगी रहती थी थक जाती थी। लेकिन वहा सभी मुझे कामचोर कहते थे। अनामिका की आखो में आसू आ गए। उसने अपना मुह अपने हाथो में छुपा लिया।

वह पाषाणवत् इन्सान न जाने क्या कांप-सा गया। ठकलाता हुआ वह बोला तुम जाओ, तुम जाओ तुम्हें कोई चिता करने की जरूरत नहीं

सब ठीक हो जाएगा। आखिर तुम्हारी सिफारिश सेठ हुकुमचन्द ने की है मेरा पैसा सुरक्षित है और तुम आजाद हो गई। बस बस!''

अनामिका अपनी आखों को पोछती हुई चली गई।

दयाल उन कागजों को एक मजबूत किन्तु पुरानी लोहे की तिजोरी में रखने लगा। वह तिजोरी हरे रंग की थी जिसका रंग जगह जगह से उतर गया था और जिसमें नोटों की गड्डियां जेवर और मान के छोटे छोटे पास पड़े थे।

दयाल ने एक बार उन सब पर बड़ी आत्मीयता से हाथ फेरा और तिजोरी बन्द करके विचित्र दृष्टि से कमरे को देखता हुआ बाहर चला गया।

चार

इसके पश्चात् अनाम का वकील दयाल और अनामिका से सम्बन्ध बढ़ता ही गया। जब दयाल से उसका सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और निकटतम हो गया तब उसने जाना दयाल अत्यन्त कठोर और कृपण मनुष्य है। उसके हृदय में प्यार की एक लहर भी नहीं है। वह पैसों के लिए किसीका लिहाज नहीं रखता। लेनदेन के मामले में न कोई उसका मित्र है और न कोई अपना। किन्तु अनाम यह भी स्वीकार कर सकता था कि दयाल उसके प्रति उतना कठोर नहीं है जितना दूसरों के प्रति। हर माह ब्याज पहुंचाने के बाद वह उसके साथ उदारता का व्यवहार-बर्ताव करता है।

दयाल को अनाम के रुपयों का बड़ा खतरा था। उसने सोच लिया था कि अनाम इस तरह जीवन भर उसके रुपये नहीं दे पाएगा। अतः उसने अनाम के चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

जयपुर के एक कालेज का हाल उसके लिए माग लिया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन शिक्षा मन्त्री से कराया गया। शिक्षा मन्त्री ने उसकी कला की

सराहना करते हुए कहा — अनाम जी की कला में विशिष्ट प्रयोग है। केवल रेखाओं के द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति इन की प्रभावशाली रूप में उद्घाटित है। उन्होंने चित्रकार को अपनी ओर से इस चित्र के पाँच सौ रुपये देने की घोषणा की। यह दिन था अनामस्मरण!

जिस दिन अनाम को रुपये मिले उसी दिन दयाल टपक गया और अपने पूरे पाँच सौ रुपये ले लिए। अनाम चाहता था कि दयाल अभी उससे ढाई सौ रुपये ले ले लेकिन वह इसपर राजी नहीं हुआ। जब अनाम ने अधिक अनुरोध किया तब दयाल बिगड़ गया। बोला — समय पर रुपया न देने का क्या यही तरीका है? मैंने तुम्हारी जाती हुई इज्जत को बचाया था तुम्हें जीवन दिया था। तुम्हें तो मेरी रकम बिना माँगे देनी चाहिए थी।

दयाल बाबू! मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। घर दो ट्यूशन भी छूट गए हैं।

अनाम! रुपया एक ऐसी चीज है जिसकी सख्त जरूरत हर समय हरेक को रहती है। मुझे भी रुपयों की सख्त जरूरत है। तुमसे लेकर किसी और को दूँगा।

आखिर अनाम को रुपये देने पड़े। दयाल ने जाते हुए कहा — कल घर आकर अपना हैंडनोट ले जाना। देखो भरना मत — क्योंकि ये जितने सूदखोर होते हैं वे हृदय के बड़े मैले और काले होते हैं। उनकी ईमानदारी पर भरोसा करने वाला कभी न कभी पछताता ही है।

दयाल के चले जाने के बाद अनाम बहुत उदास हो गया। बहिन के विवाह में उसने अपने कई मित्रों से थोड़ा थोड़ा करके एक हजार रुपये लिए थे व सभी उसका पल्ला खींचेंगे। सभी को थोड़े-थोड़े की आशा है। कुछ पाने की उम्मीद है। इन सब बातों से वह बड़ा व्यग्र हो गया।

रास्ते में वह विचारता जा रहा था यदि मैं चित्रकार नहीं होता कितना अच्छा होता? कहीं अच्छी नौकरी मिल जाती हर माह तनखा

मिलती। लकिन उस समय मेरा कोई सम्मान नही करता। सभी मुझे एक साधारण व्यक्ति समझकर उपेक्षा की दृष्टि स देखत। आज मुझे लोग एक कुशल प्रयोगवादी, आधुनिकतम जीवन का एक अच्छा चितेरा मानत हैं और मेरी कला का समझने वाले मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मेरी कहानियो का अलग प्रभाव है। चित्र शली का। दोनो क्षेत्रो म धीरे धीरे मेरी धाक हो जाएगी। मेरी बहिन?

विचार चलचित्र की भाति पल पल म बदल रह थे।

'हा उस पढी लिखी भावुक बहिन को दहेज के अभाव म कितना साधारण पति मिला है। एक क्लक बी० ए० पास क्लक! जो न तो अधिक सुदर ह और न अधिक चतुर! फिर भी उसके लिए डेढ दो हजार रुपय खच हो गए। खच बढता ही जा रहा है।'

फिर उसका सम्बध उच्च मध्यवग और पूजीपति वग से दिनादिन बढ रहा था जिससे उसके खच म वद्धि हो रही थी पर आय म नही। वह जो थोडा बहुत ट्यूशन और पत्रो से कमाता था उसम स एक पसा भी नही बचा सकता था। उसे दिन प्रतिदिन अपना रहन-सहन ऊचा करना पड रहा था। उस अपना होटलो का खच बढाना पड रहा था। हर तरफ से खच बढता ही गया और आय के बढने का कोई जरिया नही बना। निदान वह बहुत तग हो गया। जब ट्यूशन न उसपर तनिक भी रहम नही दिखाया तब वह अपन घर म आकर टूटा हुआ-सा पड गया।

थोडी दर के बाद इन्दु आई। इस बीच इन्दु की जान पहचान अनाम से काफी हो चुकी थी। अनाम उसकी ओर तीव्र रूप स आकर्षित था। वह अपने जीवन की विषमताओ व अभावो को विस्मृत करके इन्दु के समक्ष—मैं अत्यत भाग्यशाली और सुखी चित्रकार हू। जिसे तुम चाहती हो—का प्रदशन किया करता था। इस मिथ्या बातो से उसके अतस को सुख मिलता था।

' अभी प्राम दुनियामा म पिग हुआ था। उस लग रहा था कि जब ही उसर मिना का इस बात का पता लगगा कि उसका पास मो रुपया मिन है यस ही व अपन रुपया का माग कर बठग और न मिलन पर उस एक बईमान मानेंग ? पर वह यह भी ना ध्या ? इयार उस हृदयगान आत्मी य पगुन म यचार निरन्ता भा गन्ज नहा। यहा स उसे पता लग गया कि उस पाज रुपया मिलगा ? यस यह उसर पीछ-पीछ रना आया ? मूल है मूल ! उसन घणा स रुपाय क नाम पर मूरना भाग पर इन्दु के आगमन न उस दशा नहीं करन दिया। वह हसना हुआ-सा बाना 'आज यहा अचानक आना कस हुआ ? खरियत ता है ?'

वड अनजान बन रह हा ?

क्या ?

पाच सौ रुपय क्या अकल ही हजम करना चाहत हा ?

आह ! वह गभीर हो गया यह कस हा सकता है इन्दु तुम्हार बिना अनाम इन रुपया का उपयाग नहीं कर सकता। बाना कहा चलागी ?

'चौधरी रेस्त्रा म !

मैं अभी तयार होता हू।

अनाम न झट से कपड पहने और चल पडा। चौधरी रेस्त्रा एक उच्च स्तर का रेस्त्रा है ! वहा अनाम के पच्चीस रुपय खच हा गए। मन से न चाहत हुए भी उसन इन्दु के समक्ष अत्यन्त दरियादिली का परिचय दिया।

रात को वह लौटा। अनामिका भोजन बनाकर बठी हुई थी। समीप वरदा अपन अन्तस की जलन का परिचय द रही था। वह कह रही थी, यह इन्दु अनाम बाबू का अपन प्रेम जाल म फसा रही है। एक साधारण अध्यापिका का चरित्र कसा हा सकता है वह तुमसे नहीं छिपा है अनामिका दीदी ?

अनामिका न वरदा का समझाया किसी पर लाछन लगाना ठीक

नहीं है। सभी आदमी अच्छे होते हैं और सभी बुरे।

लाछन, नहीं अना दीदी य नर्से और य अध्यापिकाए कभी भी चरित्र की अच्छी नही होती। अपने अनाम बाबू बडे भाने हैं, यह इन्दु की मीठी-मीठी बातों में आ गए। तुम याद रखना एक न एक दिन यह अनाम बाबू से अवश्य छल करेगी।

बसाखी की खट् खट् सुनते ही बरखा चुप हो गई। अनामिका ने इस तरह का भाव बनाया जैसे वह बहुत दूर से अपने आप में खोई हुई है। किवाडा के पास 'खट् खट्' आने के साथ ही बरखा उठकर चली गई। अनाम ने सहजता में पूछा मेरे आने ही चल पडी।

'हां मां पुकार रही है।

अनाम ने कुछ नहीं कहा। वह भीतर चला आया। बसाखी को दीवार के सहारे खडा करके वह कुर्सी पर बैठ गया। मुह पर हाथ फेरकर उसने एक गहरा निश्वास लिया।

अनामिका ने आकर पूछा खाना लाऊं!

नहीं।

क्यो?

मैंने बाहर खाना खा लिया।

फिर आपने मुझे कहा क्या नहीं?

तुम घर में नहीं थी, इसी बीच इन्दु आ गई और मैं उसके साथ चला गया।

बाबा रे बाबा इन्दु ने आपपर क्या जादू कर दिया है कि आप उसके इशारा पर नाचने लगे! उसे तुरन्त बरखा की बात याद हो आई।

अनाम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह अर्थ भरी दृष्टि से अनामिका को देखता रहा। अनामिका पर उस दृष्टि की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह निर्विकार भाव से बोली बुरा न मानें तो मैं आपको एक बात

रहती हूँ।

यहाँ ? अनाम की दृष्टि में गुरुमता थी।

आप इन्दु से शादी कर लीजिए।

जैसे हृदय वीणा के सभी तारों को झकझोर दिया हो। ऐसा प्रतीत हुआ अनाम को। वह एकटक अनामिका के मुस्कराते हुए मुख को देखता रहा।

तब वह शांति से बोला मैं निमाण विवाह कभी नहीं करता हूँ मेरे पास पैसा नहीं हैं मेरी कोई स्थायी नौकरी भी नहीं आय नहीं है। अपना नाम मन्ज नहीं है। अनामिका कुछ बोल इसके पहले ही अनाम फिर बोल उठा आज मुझे पाँच सौ रुपए मिल जाते बहिन के विवाह का कुछ कर्ज चुका ऊँगा। कुछ मित्रों को थोड़ा-थोड़ा देकर उनको धीरज देता। पर नाराम दयाल बीच में ही आ टपका और सब कुछ छीन कर ले गया। अनामिका ऐसा दयाहीन आदमी मैंने कहीं भी नहीं देखा। मैंने उससे कहा कि तुम आधा ले लो पर नहीं पूरे अपने पाँच सौ रुपए ले लिए। अब बताओ कि मुझे उन लोगों के सामने कितना लज्जित होना पड़ेगा।

अनामिका ने अनाम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और वह चली गई। जाते जाते उसका चेहरा गंभीर हो गया।

दूसरे ही दिन सवेरे अनामिका ने दयाल के पास से अनाम को पाँच सौ रुपये लाकर दे दिए। अनाम का हृदय उस दाता के प्रति श्रद्धा से भर आया। उसने कुछ कहना चाहा पर अनामिका ने मना कर दिया। बस इतना ही कहा आप जाकर दयाल बाबू के कागज पर हस्ताक्षर कर आइएगा।

उस घटना से आज तक दयाल अनाम के प्रति उतना कठोर नहीं बना जितना औरों के प्रति बनता था। अनाम का जीवन पूर्ववत ही था। अनामिका उसकी दासी वरदा उसकी पड़ोसिन और इन्दु उसकी प्रेमिका।

बम य ही जीवन क इदगिद नौडने वाले चरित्र !

पाच

प्रभात की स्वर्णिम किरण ऊच ऊच मराना की नीवारा का चुम्बन लेती हुइ नाच रही था। अनाम न मूरज की ओर पडन वाली खिडकी का खोला ताकि धूप कमरे म आ जाए।

अनामिका अभी तक नहा आई थी। इधर कुछ नि्ना से उसकी तबीयत ठीक नही थी।

वरदा ने किवाड खटखटाए। अनाम ने बगल म बसाखी दबाकर द्वार खोला। वरदा चाय लाइ थी।

अनो नीदी की आना ह कि जब तक वह न आए तब तक मैं आपकी चाय का प्रब ध कर निया करू।

अनाम न कोइ उत्तर नही दिया। वह चुपचाप अपनी कुर्सी पर बठकर चाय पीने लगा।

वरदा बोली आप हमारे साथ सिनमा नहा गए पर इन्दु के साथ !

बीच म ही अनाम बोला वरदा मैं और इन्दु किसी काम के लिए क ी चल गए थ।

वह रूठती हुई बोला मच क्या नही कहत कि मुझ जमी काली लडकी के साथ आपको सिनमा देखना अच्छा नहा लगता।

यह बात नहा है वरदा मैं तुम्हारे साथ कई बार सिनेमा देख चुका हू।'

झठ क्या बोलत है ? आप मेर माथ सिनेमा दखन चले थे कि मैं आपका जबरन्स्ती ल गई थी ?

तुम जमा भी चाहो मोच सकती हा इसकी तुम्ह स्वतन्त्रता है। वरदा मैं किसीके हृदय को नही दुखाता। सच कहू इन्दु म मैं प्यार करता हू।

मैं चाहता हूँ कि वह मुझसे खुश रहे। कदाचित उसको खुश करने में तुम्हारा अपमान भी हो सकता है पर मुझे विश्वास है कि तुम उसका बुरा नहीं मानोगी? उसे मेरी मजबूरी समझोगी।

वरन्दा को अनाम से ऐसे शब्दों की आशा नहीं थी। वह स्वयं अनाम पर अपना अधिकार समझती थी। सोचती थी कि यदि वह जोर लगाएगी तो अनाम उसके प्यार को स्वीकार कर सकता है। किंतु आज अचानक अनाम ने उसके भ्रम को तोड़ दिया। वह विस्मित-सी ठगी-सी अनाम को देखती रही। अनाम अपनी दृष्टि को ढलती किरणों पर जमाकर बोला वरन्दा मेरे स्नेह को गलत मत समझना इस मकान में एक शरीफ व्यक्ति होकर रहना चाहता हूँ। तुम्हारे बाबा (पिता) और तुम्हारी माँ मुझे अपना बेटा समझते हैं। मैं उनके विश्वास को खोना नहीं चाहता। मैं उनके हृदयों पर आघात नहीं पहुँचाना चाहता।

वरन्दा प्यासी तरह चली गई।

अनाम लापरवाही से अपने आपसे बोला यह काली लड़की अपने आपको क्या समझती है! मुझे पहले ही कुछ शक था कि यह मुझे अपने जाल में फँसाएगी। छि: न रंग और न रूप!

उसने उठकर अंगड़ाई ली और फिर गुसलखाने में चला गया।

अनामिका आ गई थी। वह स्वयं जलाकर चाय बनाने लगी। आज उसने हरे रंग की साड़ी और नीला ब्लाउज पहन रखा था। इससे उसका चेहरा सफेद हुआ जा रहा था। बार बार पूछने पर भी अनाम उससे संतोषप्रद उत्तर नहीं पा रहा था। वह अनाम को यह कहकर टाल रही थी कि वह बीमार है उसे कुछ शिकायत है।

अनामिका अनाम के लिए सोचने का विषय था। यह नारी रहस्यमयी-सी उसके सम्मुख खड़ी थी। एक जलता प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में अना-

मिका को लेकर घूमा करता था। अनामिका बीस वर्ष को पार कर रही थी। उसने उसे कभी प्रेम और परिवार के बारे में बातचीत करते नहीं देखा। वह शांत और मौन रहती थी। जब कभी अनाम को उदास देखती तब वह उसकी उदासी को दूर करने का प्रयत्न करती थी। अनाम ने अनामिका को कभी हँसते मुस्कराते देखा था।

एक बार अनाम ने अनामिका से पूछा था तुम्हारा गहरा मौन मेरी चिंता का कारण बन जाता है।

आप मेरी चिंता न कीजिए अनाम बाबू कुछ ऐसी स्त्रियाँ होती हैं जिनके जीवन में घोर एकांत के अतिरिक्त कुछ होता ही नहीं। चरम दुख उनके जीवन का प्रतिरूप होता है।

इन बातों से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। अनो ! क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?

नहीं।

फिर तुम विवाह क्यों नहीं करती ?

अनामिका के चेहरे पर तरस भरी हँसी बिखर गई एक दासी के साथ कौन विवाह करेगा ? फिर माँ के आँचल पर दाग बनकर ? अनाम बाबू माँ का कलंक उसकी संतान को भी कलंकित कर देता है। और फिर मैं माँ को छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहती। वह पीड़ाओं के मामले में धरती माता है।

अनाम ने देखा कि अनामिका के चेहरे पर अवसाद की घटाएँ उमड़ आई हैं।

आप बार बार पूछा करते हैं मेरे बारे में जानने की इच्छा रखते हैं चाहकर भी मैं अपने बारे में आपको नहीं बताना चाहती।

क्यों ?'

आप चित्रकार और लेखक हैं आपके बारे में लोग कहते हैं कि आपमें

मनुष्पा पूर्ण ट्टर मरा हु नहिन मैं उसा नहीं समझना। मैं इतना ही जानी हूँ कि पनारार मा एक साधारण मनुष्य हाता है।

नहिन तुम्हारी मा न यौन सा पाप किया ?

वह मरा पति का सम्बर नाग ग। मैं बणसरर हू मर वार का कोई पता नहा और न श गरा मा मुझ यह बताना चाहता है। माताजी म उस ना न कहना था वह भी कह गइ। उसा हृदय पर भरता-सा लगा।

अनाम न तुरन्त प्रश्न किया फिर तुम अपना मा का इतना सवा क्यों करता हो ?

वह मा है बस इतीलिए।

इस उत्तर न अनाम के मस्तिष्क म अनामिका क लिए आदर की रचना कर दी। वह अनामिका क सुख और दुःख का यथार्थ ध्यान रखने लगा।

गुसलखाने क किवाड खाल साथ ही बमाली का खन्खार सुनाई पड़ी। अनामिका न तुरन्त चाय की ट्र अनाम का मज पर रख दी। अनाम न बैठते ही कहा जब तुम्हारी तबीयत खराब थी तब तुम यहा क्या आई ?

उधर बैठ कर मन नहीं लगा।'

नकिन तबीयत अधिक खराब हा गई तब ?

तब अपने आपका ईश्वर के सहार छोड दूगी। वह तुरत बात बदल कर बोली आपको दयाल बाबू न कहलवाया ह कि आप रणछोड बाबू क यहा चल जाए।

मैं ! क्या ?

वे इन्दु की पुस्तक रणछोड बाबू द्वारा छपवा देंगे। आज सवेर के वाद वे मुझ अपने एक मुवक्किल के यहा जाते हुए मिल गए थे। अचानक मजु-लिया तानते हुए बोले जस वे मुझ सवेरे इस बात का कहना भूल गए थे।

अच्छा कल तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। कह रहे थे, कि

गाना बनाने की योजना बताओ।'

आप इन्दु को लेकर रणछोड़ बाबू के यहां चले जाइएगा। मैं समझती हूं कि आपका काम बन जाएगा। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती।

बड़ा विचित्र आदमी है। अनाम ने धीरे से कहा और फिर चाय पीने लगा। क्या उस राक्षस के मन में भी इस दासी के प्रति ? एक प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में छाकर नाचने लगा।

वह चाय पीकर तुरंत इन्दु के यहां जाने को तत्पर हो गया। अनामिका को उसने खाना न बनाने के लिए कह दिया। जब वह इन्दु के घर पहुंचा तब इन्दु की विधवा मां खाना बना रही थी। उसकी बसाखी की 'खट-खट' सुनकर उसने भीतर से ही इन्दु को आवाज़ दी। इन्दु ने उसे ऊपर आने को कहा। वह धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ता हुआ कमरे में गया। उसका सांस फूल गया था। वह धम से एक कुर्सी पर बैठ गया। इन्दु ने उसके कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, 'तुम्हें ऊपर चढ़ने में बड़ा कष्ट होता है ?'

अनाम ने इन्दु की ओर देखा। उसकी आंखों में दया अंगारे-सी दहक रही थी। वह मन ही मन गुस्से में भर उठा पर ऊपर से स्वाभाविक स्वर में बोला, 'नहीं नहीं मुझे ज़रा भी कष्ट नहीं होता, तुम एक गिलास पानी तो पिलाओ न ?'

उसने पानी इस तरह पिया जैसे वह अत्यन्त प्यासा है। पानी पीकर उसने एक गहरा सांस लिया। सांस लेकर वह बोला, 'तुम्हें स्कूल कितने बजे जाना है ? क्या तुम आज छुट्टी नहीं ले सकती ?'

'आज मैंने छुट्टी पहले से ही ले रखी है।'

'फिर तुम तैयार हो जाओ, हमें रणछोड़ बाबू के यहां जाना है। तुम्हारी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी, ऐसा मेरा ख्याल है।'

इन्दु की आंखों में चमक आ गई। वह भीतर के कमरे से कपड़े बदलती हुई बोली, 'कभी-कभी घटनाएं बड़ी तेज़ी से घटती हैं जिनपर हम आसानी

बता सकती हो। तुम्हारे अंतमन के भावों को मेरी वाणी नहीं बता सकती।'

बसाखी की खट-खट की फिर गूंज हुई। अनाम अब बिल्कुल रोमांटिक मूड में इन्दु के समीप खड़ा था। इन्दु ने उसका हाथ पकड़ा और मृदु स्वर में बोली तुम्हारे कलाकारों का समाज आजकल हमारी बड़ी चर्चा करने लगा है। वे जलन करने वाले प्रतिद्वन्द्वियों की तरह हमारे बारे में अनर्गल आलाप और निराधार छिछली प्रेम चर्चाएं कर रहे हैं। अनाम ! क्या ऐसी बकवास सुनकर तुम चिंतित नहीं होते ?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस चर्चा को यहीं पर खत्म कर देना चाहता था। वह इन्दु की मां के समक्ष किंचित भी छिछोरा बनने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि आर्थिक रूप से अवलम्बित इन्दु की मां इन्दु के विवाह में कम इच्छुक है और थोड़ी बहुत है भी तो वह ऐसा घर चाहती है जो उसे नौकरी करना न छुड़ाए। अनाम यह भी भली भांति जानता था कि उसके पास कोई सरकारी नौकरी नहीं है वह करना भी नहीं चाहता, आखिर एज भी हो गया है और फिर जो स्वतंत्रता और सम्मान इस काम में है वह किसी भी काम में नहीं।

अनाम और इन्दु घर से बाहर आ गए थे। अनाम बात करने के मूड में था अतः उसने टैक्सी ली। टैक्सी में बैठने के साथ ही अनाम ने कहा अब बताओ तुम उस समय क्या कह रही थी ?'

मैं कह रही थी कि क्या इन निराधार चर्चाओं से तुम परेशान नहीं होते ? उसने नितांत सहज भाव से कहा।

नहीं !'

'क्यों ?'

क्योंकि इन चर्चाओं में सत्य का आधार बोलता है। क्या तुम मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों के बाबत इस कोण से नहीं सोचती कि हमारे अत्यन्त

गहरा सम्बन्ध है ?

सम्बन्ध प्रेम का रूप होता है पर जरूरी नहीं। वे गहरी मित्रता की सीमा भी ले सकते हैं।

सम्बन्ध ही आगे चलकर गहरे प्रेम का रूप ले लेते हैं। जो प्रवृत्ति जिन व्यक्ति मिलते हैं, मन बसते हैं मित्रता बनती है, मित्रता प्रेम का रूप धारण करके विवाह के पवित्र बन्धन में बंध जाती है।

फिर सब सावधान हो जाना चाहिए। इन्दु के मुंह पर चंचलता थी जो अनाम को बड़ी अच्छी लगा।

अनाम के मन में आया कि आज वह इन्दु को अपने प्यार के बारे में स्पष्ट कह दे पर उसका साहस नहीं हुआ। प्रेम का स्पष्ट बखान उसे छूछा पन और मूर्खता का परिचायक लगा। यह तो एक अहसास की चीज है। जिसे वह भी जानता था और इन्दु भी जानती थी।

वाह !

टक्सी मुड़ चली। इन्दु ने अपनी गर्दन दूसरी ओर कर ली। अनाम भी विचारों में खो गया। आज से पांच वर्ष पहले वह नागपुर में था। इसी प्रकार उसको प्रतिमा से प्यार हुआ था। प्रतिमा उसपर जान देती थी और वह भी प्रतिमा के बिना एक पल भी नहीं रह सकता था किंतु प्रतिमा के माता पिता एक लंगड़े के साथ अपनी बेटी को बांधने को तैयार नहीं हुए। इस बात का पता जब अनाम के मित्रों को लगा तो उनके मन की घृणा भड़क उठी और उन्होंने विचित्र कथाएं गढ़ लीं। एक मित्र ने तो एक कहानी ही बना डाली। अनाम का हाथ अपनी टांग पर चला गया। वह टांग पर हाथ फेरने लगा। रणछोड़ बाबू की कोठी आ गई थी। टक्सी रुकी और अनाम और इन्दु दोनों ने दरबान को भीतर सूचना पहुंचाने के लिए कहा।

एक भव्य कोठी। संगमरमर और सीमेंट की बनी। राजसी सामन्तो

जैसे ठाठ और रौनक।

वे दोनों विस्मित दृष्टि से देखते रहे।

रणछोड़ बाबू ने बाहर आकर सस्मित मुख से उनका स्वागत किया। वे उन्हें एक आलीशान कमरे में ले गए जिसको इन्दु एकटक देखती रही। इसे उसे ऐसे व्यवस्थित और आधुनिक सामान से सज्जित कमरे अत्यन्त प्रिय थे। रणछोड़ बाबू उसकी बात को समझ गए। तनिक मुस्कराकर बोले, इन्दुजी, कमरा पसन्द आया?

बहुत! उसने इस तरह कहा जैसे कोई बच्चा अजीब वस्तु देखकर खुशी में झूमता है।

बैठिए! आप बैठिए अनामजी। आपको खड़े होने में कष्ट होगा। रणछोड़ बाबू ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा, आइए इन्दुजी, मैं आपको मकान दिखाऊँ।

इन्दु ने प्रश्न भरी-दृष्टि से अनाम की ओर देखा। रणछोड़ बाबू चलते हुए बोले, आइए! अनामजी मेरे मकान को पहले ही देख चुके हैं। व्यर्थ में चढ़ने-उतरने की तकलीफ इन्हें नहीं देनी चाहिए।

अनाम के मन में आया कि वह इस सेठ के बच्चे के सिर पर बैसाखी दे मारे। क्या देवता बन रहा है? लंगड़ा हूँ तो क्या अभी तुमसे अधिक चल सकता हूँ। भाग सकता हूँ।

घृणा से उसका मुख विकृत हो गया किंतु वह नहीं बोला और न ही किसी ने उसके चेहरे को देखा।

इन्दु और रणछोड़ बाबू बाहर चले गए।

इन्दु रणछोड़ बाबू के ऐश्वर्य से बहुत प्रभावित हुई। प्रत्येक कमरे की प्रशंसा के साथ-साथ वे इन्दु की कहानियों की प्रशंसा कर दिया करते थे। अनाम के विषय के बारे में उनकी और इन्दु की राय परस्पर मिल गई जिससे इन्दु को गौरवानुभूति हुई। उसे लगा कि उसकी भावना सही है।

अनाम न बीच म ही कहा 'रणछोड बाबू! इनकी कहानियां बडी अपाल करती हैं। सजन के मामल म इनका हृदय अनोखा है। शैली कथा-वस्तु और मार्मिक चरित्र चित्रण म य नवीन पीढी के कलाकारा के साथ सहजता से बढ सकती हैं।'

मैं आधुनिक साहित्य पढता रहता हू। साहित्य की ओर मरी गहरी दिलचस्पी है। मैं अमूमन राजस्थानिया से भिन्न हू। मरे जीवन का मूल ध्यय पसा नहीं आनद है। आनद भी सोद्देश्य। उद्देश्यहीन आनद म मरा विश्वास नहा। म चाहता हू कि एक प्रकाशन-सस्था खोलू।'

यह तो बहुत अच्छी बात है।

मैं कुछ रुपया लगा सकता हू। पहले मेरा एक पत्र निकालने का विचार था अब मैंने वह विचार बदल दिया है। दयाल ने मुझे इन्दुजी के बारे म बताया। वसे स्त्रिया के मामले म वह निरा कोरा है। प्यार और रोमास पर वह सवथा बच्चो से बातचीत करता है। लेकिन इन्दुजी के बारे म उसने गहरी तो नहा फिर भी तनिक दिलचस्पी दिखाई। इनकी एक कहानी की प्रशसा भी की।

इन्दु न गव स कहा उस कहानी को मैंने बडी महनत से लिखा है।' ऐसा कहते समय उसकी दृष्टि अनाम पर जम गई। अनाम पूववत गभीर था जस उसके चहरे पर कोई नए भाव नहीं आए हैं।

रणछोड बाबू न बात क सिलसिले को जोडते हुए कहा इस राजधानी म बस मकडा लेखक हैं। बडे-बडे सेठो सामता जमीदारा तथा मत्रियो की जी हुजूरी करने वाले, उनके लख लिखकर आजीविका कमाने वाले, उनकी झूठी प्रशसा करके अपने मासिक और दनिक पत्र चलाने वाले तथा उन्ह ध्यय म साहित्यकार कहकर पसा एठने वाले। वस्तुत यहा साहित्यिक व्यापारी बहुत अधिक हैं। और तो और यह राजधानी साधना की कम पर दिखावट की बडी दुकान है। ऐसी स्थिति म मेरे द्वारा प्रकाशन सस्था

का सवाजन कुछ व्यक्तियों की दृष्टि म निहित स्वार्थों का प्रतीक माना जा सकता है किंतु इसम ऐसा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं विशुद्ध रूप से साहित्य की सेवा करना चाहता हू।

इसका मतलब है आप बड पैमाने पर यह काय करना चाहते हैं।

नहीं। उसने गदन को झटका देकर कहा मैं फिलहाल बड रूप मे इसे नहीं पालना चाहता। मैं केवल आपका और इन्दु जी की सभी पुस्तकें छापने का विचार रखता हू। मैं आपके चित्रों का एक एलबम तथा आपकी चित्र शली पर विभिन्न आलोचकों के लेखों का सग्रह छापना चाहता हू। यह आश्चय है कि मैं चित्रकारों व लेखक दोनों म एक सा अधिकार रखता हू।

अनाम न तुरन्त कहा यह तो और अच्छा रहेगा। स्थानीय लखको को तो लेखक की सज्ञा देना ही साहित्य का अपमान है। रणछोड बाबू यहा के लेखक चितन मनन के नाम पर शून्य है। न इन्होंने फ्रायड को पढ़ा और न मार्क्स को। जग हैवलाक एलिस कामू काफ्का समुअल बकेट और सात्र के कदाचित नाम भी नहीं जानते होंगे। भला इनके पढ बिना कोई साहित्यकार जीवित रह सकता है! और पिकासो वानगाग पाल गोगा यामिनीराय शुभा टगोर आदि चित्रकारों के बार म यह बिल्कुल नहीं जानते।

रणछोड बाबू न अपनी सहमति प्रकट की।

इन्दु न तुरन्त बात के प्रसग को बदल दिया फिर मैं समझती हू कि बात पक्की हो गई। अब मैं अपनी सहेलियों म कहानी सग्रह के प्रकाशन की जोर शोर स घोषणा कर सकती हू?

बताइ!'

इसके बाद अनाम प्रकाशन की एक रूपरेखा बनाने का वायदा करके उठ खडा हुआ। जाते जाते रणछोड बाबू न इन्दु स कहा आप मुझे फोन

नम्बर ३०८ पर कभी भी याद कर सकती है।'

वमाखी की वह मट फिर मुनाई पड़ी। बाहर आते हा इन्दु के चहरे पर उल्लास बिखर गया। वह चहकती हुई चिड़िया सी मधुर स्वर म बाती अनाम रणजीत बाबू की उम्र मरे ख्याल म तीस पतीस की होगी। क्या वे अच्छा पारखी ह ?'

'शायद।' ठण्डा-सा उत्तर दिया अनाम न।

छः

इधर अनामिका अधिक अस्वस्थ हो गइ थी इसलिए सवेर की चाय वरुणा लाया करती थी। अनाम का उसके साथ का व्यवहार जरा-सा भी सुन्दर नही था। वह हर समय एसे भावो का प्रदर्शन किया करता था जसे वह वरुणा स दूर बहुत दूर भागना चाहता है। यही कारण था कि जब वरुणा शरत चन्द्र की कमल अथवा माविनी की चर्चा करती तो अनाम उसके बारे म इस तरह उत्तर दिया करता था जसे य बातें जीवन म कोई महत्व नही रखती हैं। व्यथ ही समय को खराब करती है परन्तु कल सवेर एक विचित्र अकल्पनीय घटना घट गई।

अभी तक अनाम विस्तर पर सोया हुआ था। वरुणा न चाय की प्याली को मेज पर रखकर उसे जगाया। अनाम ने अपनी अलसाई आखो स वरुणा को देखा। हमेशा की अपेक्षा आज वरुणा कुछ अधिक अच्छी लग रही थी। उसके गालो म उल्लास की परछाइया नाच रही थी। उसकी आखो म प्यार की गहराइया तैर रही थी। उसका शरीर उसे इतना काला नही लगा जसा सदा लगता था। आज उसे उसम भी सौन्दर्य की ज्योत्स्ना विकीर्ण होती हुई लगी। उसके बाल खुले और नीचे कमर तक छितराए हुए थ। अनाम उन सबको एकटक देखता रहा। उसने क्षण भर के लिए

अनाम न हसन का प्रयास करत हुए कहा वह पगली है ।

कामो स निवत्त होकर वह इदु के घर की ओर चल पडा । आज मौसम अच्छा था । सवरे-सवरे बादल निकल आए थ जिनसे आकाश म मृग-छौने दौड रह थे ।

जब वह इदु के घर पर पहुचा तब इदु उसे नही मिली । इदु की मा ने बताया कि वह रणछोड बाबू के यहा खाना खान गई है । अनाम का मन डाह स भर गया । उसन सोचा कि वह उस छोडकर कस अकेली रणछोड बाबू क यहा चली गइ ? हठात उसके मुह पर दुख की परछाइया नाच उठी । इदु की मा न उसक चेहर के भावो को समझन का प्रयास नही किया । वह अपन आचल को ठीक करती हुइ बोली कल इदु की वषगाठ है शायद रणछोड बाबू इस उपलक्ष्य म उस अपनी मनपसद का तोहफा खरीद कर दग । वह उनके साथ बाजार भी जाएगी और दोपहर तक लौटगी ?

अनाम ने खामोशी से मुस्कराने की चेष्टा की । वह उखडे हुए स्वर म बोला, वह आए तो उसे कह दीजिएगा कि आज शाम वह मरे साथ खाना खाएगी ।

सात

वह तत्काल लौट आया ।

घर म घुसत ही उसन देखा कि वरुण न अपन कमरे क आग कोयले स उसकी बसाखी का भोडा चित्र बनाया है । मन म ताप के होत हुए भी उसन उसके प्रति लापरवाही दिखाई । वह खट-खट करक ऊपर चढा । अप्रत्याशित उसने अपने पावो के नीचे लगडा लिखा हुआ देखा । उसन अपने एक पाव से उस शब्द को कुचल दिया । वह जान गया कि यह हरकत

की ग्राशा ग्रौर उद्देश्य को छोडकर परिवार की चक्की म पिसकर ग्रपना ग्रस्तित्व मिटा दू। नहा मैं एसा नही कर सकता। मुझे एक महान चित्रकार बनना है ग्रौर मैं ग्रवश्य बनूगा। ग्रौर यह मित्र ? जनता प्रश्न ग्रनाम क ग्राग नाचा। उसन घृणा स मुह बिचका लिया, य मित्र शत्रु का काम करत हैं। उन्ह मरा सुखी जीवन पसन्द नही। सुन्दर सरकारी नौकरिया कर-करके ग्रपन का बचन हैं ग्रौर परिवार की सवा करके दकियानूसी विचार वाल बडे-बूढा की सहानुभूति ग्रहण कर लत है। छि गिरगिट कही के ! किन्तु मैं भी ग्रपने मित्रा के हक म ग्रच्छा नही। ग्रौर उसने कुछ घटनाग्रा का विश्लेषण करके जाना कि उसन ग्रपन व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण ग्रसन प्रत्यन मित्र की हानि पहुचाई है। उसन किसी भी मित्र पर कार्टून बनाना नहा छाडा हर रास्त पर कहानी लिखी। उनके वास्तविक रूप को विकृत करके उसन उनकी मनचाही खिल्ली उडाई। फिर वह ग्रपने दोस्ता से ग्रच्छाई की कब उम्मीद रख सकता है ?

नीचे स वरुण की मा चिल्लाई बारह बज रह ह ग्रौर तू ग्रभी तक सोई हुई ह वरुणा ! ग्रा री वरुणा उठ ! उठ न !

बारह ! ग्रनाम चौंका। उसन पत्र का फाडकर फक दिया। 'इदु की कल वषगाठ है। उसन साचा रणछाड बाबू उस मनपसन्द तोहफा दग। ग्रौर वह ?'

उसके पास पसा ही नहा है। फिर इन्दु उसके बारे म क्या समझेगी ? मन के ग्रभाव म वह उसके प्यार का गलत मूल्यावन कर लगी। साचगी कि जा मट नहा द सकता वह हृदय क्या दगा ? यह पूजीवादी युग है। ग्रादान प्रदान पर सम्बन्धा का टिके रहना ग्रवलम्बित है। फिर मनुष्य का ग्रहम सावजनिक स्थाना पर ग्रधिक सम्मान की चाह रखता है। फिर पसा ? पसा ?

ग्रप्रत्याशित उसके मस्तिष्क म दयाल की घिनौनी ग्रौर कठोर मूर्ति

नाच उठी। एक एस नरपिशाच का हृदयहीन विकृत चहरा नाच उठा जिस-पर मानवीय सवेदना की हल्की रेखाए भी नही था। वह कुछ क्षण तक उस कठोर मजूस को गालिया देता रहा। फिर वह कपडे पहनकर वहा स चला।

सीढ़िया पर वरदा उन्मन सी बठी थी। इस बार उसन कोई हरकत नहीं की। वह उस एक दुदमनीय भावना से देखती रही। जब उसने देखा कि अनाम घर स बाहर निकल रहा है तब उसन अपन भाई श्रीश को आवाज लगाई कि भीतर आ जाओ।

अनाम ने देखा कि वरदा का छोटा भाई एक लकडी को बगल म दबाए उसी तरह हिचकोल खाता हुआ चल रहा है। अनाम देखकर खोखली हसी हस पडा ताकि उसकी झेंप मिट जाए।

उस वरदा की दुष्टता अच्छी नहीं लगी। यह बिलकुल अशिष्टता है किन्तु वह कर ही क्या सकता ह ! कुछ दुष्टताए एसी होती हैं जिनके बारे म आदमी चाह कर भी कुछ नही कर सकता। वह तागे म बठा हुआ वरदा का विश्लेषण करने लगा। वरदा की आयु अपरिपक्व है और अपरिपक्व का प्यार या तो सब कुछ सहकर देखता है और एक जिज्ञासा भरा स्वय स प्रश्न करता रहता है कि एसा क्या होता है ? अथवा उसम असमता का विरोध उत्पन्न हो जाता है जिसके द्वारा उसका हृदय घणा का प्रदान करता रहता है किन्तु वह घणा एक उपहास अथवा हल्की दुष्टता बनकर रह जाती है जसी वरदा की रह गई है।

वह काली और साधारण लडकी है ?

अचानक सडक पर कोहराम मचा। मालूम हुआ कि एक सज्जन एक दुकानदार म दस्ता स कह रह हैं कि व उसे पसा दे चुक हैं किन्तु दुकान-दार नहा मान रहा है। तब उक्त सज्जन एक उन्मादी की तरह अपने देश म चल रहा धाधलबाजी नौकरशाही भ्रष्टाचार और अनाचार की बात करन लग। उन्होंने दूध क धोए इसान की तरह वतमान के सभी लोगा का

लुटेरा ग्रौर ठग कहा पर दूकानदार ग्रपन हठ पर ग्रडा ही रहा ग्रौर उसन स जन को पसे देन पडे। इस घटना न ग्रनाम की विचारधारा का भग कर दिया। उसक सामन इ दु का उल्लास भरा चेहरा नाच उठा। उसके कर-स्पश का मवन्न ग्रव भी ग्रनाम के हृदय म हल्का मधुर सगीत उत्पन्न कर रहा था। ग्राज इ दु रणछोड बाबू के साथ ग्रकेली क्या चली गई ? फिर उसने ग्रपन मन का ढान्स दिया कि रणछाड बाबू के कथन का टालने की उसकी हिम्मत नहा हुई होगी। उसने सोचा होगा कि इस ग्रस्वीकृति से नाराज होकर रणछाड बाबू प्रकाशन का काय स्थगित न कर द। कुछ य बनिए हात ही ऐस है। चाहे ता बेटा भी दे दें नही ता बेटी भी छीन ल।

दयाल का मकान ग्रा गया था।

किवाडा के समीप पहुचत ही ग्रनाम को सडे हुए ग्रन्न की वास ग्राई। उसने नाक के ग्रागे रूमाल देकर दरवाजा खटखटाया। ग्रनामिका न द्वार खाला। उसे देखत ही उसन विस्मय स पूछा, तुम यहा ? तुम्हारी तो तबियत खराब है न ?

हा पर दयाल बाबू छुट्टी नही दत।

ग्रोह ! कितना नीच ग्रादमी है भगवान उसे कडा दड देगा।

ग्रनामिका ने सकत स समझाया कि वे धीरे बाल। दयाल बाबू के कान बड तज हैं।

क्या कर रह हैं दयाल बाबू ?' उसने पूछा।

सो रहे हैं।

उन्ह जगा दो।

'नही।

डरती हो ?

हा।

ठीक कहती हा कजदार को ग्रपनी ग्रासामी स डरना ही चाहिए।

अनामिका ! आज मैं दयाल बाबू को तुम्हारे बारे म कुछ कहूगा। उनका यह व्यवहार मुझे कतई पसन्द नहीं। तुम दिन-ब दिन कमजोर होती जा रही हो।

नहीं आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। य मेरे लिए देवता समान हैं। इधर मैं इनको ब्याज न दे सकी इन्होंने मागा तक नहीं। कल इन्होंने दस रुपये और उधार दिए कि दवा-दारू अच्छी तरह करो। अब आप ही कहिए ऐसे आदमी की आज्ञा न मानू तो क्या करू ? दयाल बाबू हृदयहीन और कठोर है। उनका कोई भी अपना पराया नहीं है। व केवल रुपया चाहते ह लेकिन मेरे प्रति व अत्यन्त दयालु और सहृदय हैं। मैं नहीं चाहती कि आप कुछ कहकर उनके मन को कष्ट द।

यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं कहूगा। अनाम खट खट करता दयाल क कमरे की ओर बढ़ा। खट खट जस ही कमरे क समीप पहुची वस ही दयाल फटे स्वर म चिल्लाया ओह अनाम बाबू बला कार आइए आइए !

अनाम ने बठते हुए कोमल स्वर म कहा आपको जगाकर बड़ा कष्ट दिया।

नहीं अनाम बाबू एक सूदखोर क लिए इससे अधिक प्रसन्नता और क्या हो सकती है कि कोई उसस उधार मागने आए।

अनाम न सलज्ज नत्रों स दयाल की ओर देखा। उसने अपने मुख पर अवसाद की छायाए दौड़ाई। उसने दास्यभाव दर्शाते हुए कहा एक जरूरत ही ऐसी पड गई। मैं आपका पिछला नहीं चुका सका इसक लिए शर्मिन्दा हू।

दयाल न क्रूरता स अनाम की ओर देखा। उसकी दस रोज की बनी हुई दाढ़ी स उसका चेहरा और भी भयानक लगता था। रूखे बाल और मले वस्त्र उसे और भयानक बना रह थ। वह बोला, तुम मेरे स्वभाव को

जानकर भी एसी गलती क्या करने आ जाते हो ? पहला रुपया दिया नहीं और फिर लेने आ गए।'

अनाम का स्वाभिमान आहत हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चला जाए किन्तु कल के आयोजन के स्मरण मात्र से उसका अंग अंग शिथिल हो गया। रणछोड़ बाबू व अन्य लोगों की उपस्थिति में यदि वह श्रेष्ठ चित्रकार की प्रतिष्ठा के अनुकूल भेंट नहीं देता है तो इन्दु उससे जरूर नाराज़ हो जाएगी। उसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष तुच्छ होना पड़ेगा तथा बेवकूफों की भाँति उनके कहकहों का निशाना बनना होगा। क्या उसमें उस अपमान को सहन की शक्ति है ? नहीं नहीं ! वह उस ममान्तक अपमानजनित पीड़ा को नहीं सह सकता। उसका चेहरा तमतमा उठा। वह एसी स्थिति में भी नितान्त शान्त बैठा रहा ताकि दयाल उसके अन्तर के हाहाकार को न समझे।

मैं बहुत शर्मिन्दा हूं और वायदा करता हूं कि रणछोड बाबू से रुपया लेकर मैं आपको दे दूंगा। उसका स्वर विनती में डूबा हुआ था तथा उसकी आंखों में करुणा तैर रही थी नया हिसाब अधिक भी नहीं है।

मैं वायदा-वायदा कुछ नहीं मानता। सच तो यह है कि मैं तुम्हें रुपये नहीं दे सकूंगा।'

एसा न कहिए दयाल बाबू मेरे घर से पत्र आया है मेरी मां की तबीयत खराब है घर पर एक पैसा नहीं है। जरा सोचिए एसी स्थिति में आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो मेरा क्या होगा ?

होगा क्या ? मां बीमारी में तड़पती रहेगी और बहिन अभाव में प्यासा हृदय लिए हर उस सजी-सवरी युवती को देखती रहेगी जो अपने दिल में सुन्दर भविष्य की मधुर कल्पनाएं और इच्छाएं लिए मचलती हुई उनके आगे से गुजर रही होगी।

दयाल बाबू ! किसी के घाव पर नमक छिड़कने में आपको क्या

रुज किया जा सकता है। दयाल ने ग्लानिपूर्वक कन्धा हिलाकर गहरा मौन धारण कर लिया। उसका चेहरा बिल्कुल भावशून्य था।

अनाम का मुख दयाल के उत्तर से पीला प्रतीत होने लगा। यदि अभी वह अपना चेहरा शीशे में देखता तो मिर्गी में तड़पते व्यक्ति जैसा लगता।

दयाल अब अपने घुटना को बजा रहा था और ऐसे भावों का प्रदर्शन कर रहा था जैसे उसके मन में उसकी इस करुणामयी अस्वीकृति का कोई प्रभाव नहीं है।

अनाम ने बैसाखी संभाली। उठने का प्रयास किया। उसे लगा कि उसमें जरा भी शक्ति नहीं है। चलने के पूर्व उसने दयाल को नमस्कार किया। दयाल ने इसका उत्तर लापरवाही से दिया।

कमरे के बाहर अनामिका खड़ी थी। उसका जर्जर चेहरा अनाम के उदास मुख को देखकर शंकाओं की रेखाओं से भर आया। वह समझ गई कि दयाल बाबू ने अनाम बाबू को कोरा उत्तर दे दिया है।

क्या हुआ ?' प्रश्नसूचक दृष्टि फेंककर अनामिका ने पूछा। क्षण भर के लिए अनाम रुका और फिर अत्यन्त धीमे से जलते हुए स्वर में वह बोला यह धन को छाती पर रखकर जलेगा।

आपको रुपया की ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी ?

घर से चिट्ठी आई है वे बड़ी तंगी में हैं। वह चुप हो गया पर अनामिका को उसका मन बड़ा उद्विग्न लगा। अनामिका ने तुरन्त उसे रुकने के लिए कहा और स्वयं दयाल के कमरे में गई। दयाल अपनी तिजोरी में से नोटों को निकालकर गिन रहा था। पाँवों की आहट पाकर उसने तुरन्त नोटों को तिजोरी में रखकर उसे बन्द कर दिया। अनामिका को देखकर वह खिसियानी हँसी के साथ बोला तुम !

मैं आपसे एक विनती करने आई हूँ।

समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो। कहोगी कि कुछ रुपया और उधार दे दो। लेकिन मैं फिलहाल ऐसा नहीं कर सकूगा। मैं तुम्हे परसो पन्द्रह रुपये देकर पचीस का हैंडनोट लिखाऊगा। पचीस क्या ? इसलिए कि दस पहले वाले और पन्द्रह तब के। इन रुपयों का तुम्हे ब्याज नहीं देना होगा।

अनामिका शांत दृष्टि से दयाल को देखती रही।

दयाल कुछ परेशान-सा बोला मैं ने कहा उसे तुमने सुना नहीं ?"
दयाल फिर घुटने बजाने लगा।

अनामिका उसके समीप बैठ गई। बोली अनाम बाबू को इस बार रुपया दे दीजिए। मैं आपसे हाथ जोड़ती हू।

दयाल ने अनामिका को अभिप्राय भरी पैनी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में एक जिज्ञासा थी जो यह समझना चाहती थी कि इस वाक्य के पीछे कौन-सी भावना काम कर रही है।

तुम उनकी सिफारिश क्या कर रही हो ? क्या तुम नहीं जानती कि यह मेरा पहले से ही कर्जदार है।

जानती हू।

फिर इसे कर्ज देना कहा की बुद्धिमानी है।

बुद्धि की बात मैं नहीं करती लेकिन उन्हें मदद जरूरत है क्योंकि बाबू आप इन्हें गरीब भले हो कहने पर बेईमान नहीं कह सकते। इनके पास रुपये आते ही ये आपका सब पैसा चुकता कर देंगे ?

सारा चुकता कर देंगे। ये चित्रकार और लेखक हैं। ये कला का उत्थान उद्धार और उसे एक नया मोड़ देने में लगे हुए हैं। देखती नहीं ये सभा बड़ी-बड़ी फिलासफी और नैतिकता की बातें करते हैं।—धर्म एक ढकोसला है और भगवान एक बकवास। समाज में क्रांति आनी चाहिए और नारियों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए लेकिन ये सब बातें उस समय हवा हो जाती

हैं जब पास में रुपया नहीं होता है। देखा नहीं ग्रनाम का चेहरा, लगता है वर्षों से बेचारा बीमार है, बीमार।'

कुछ भी हो, ग्रापको ।' ग्रनामिका ने भरपूर स्नेह भरी दृष्टि से दयाल को देखा। दयाल कांप-सा गया। तनिक उखड़े उखड़े स्वर में बोला, नहीं नहीं मैं इस नहीं दूगा फिर ग्रग भग व्यक्ति से वास्ता जहा तक हो सके कम हो रखना चाहिए।'

ग्रनामिका ने दयाल को हाथ जोड दिए। विगलित स्वर म उसने कहा, इस बार ग्रापको मेरा कहना मानना ही पडेगा। यदि ग्रनाम बाबू ने यह रकम नहीं दी तो मैं दे दूगी।

तुम्हें ग्रनाम से इतनी हमदर्दी क्या है ?

ग्रनामिका गम्भीर स्वर म बोली किसी परिवार म पैसा न होने से उस परिवार को कितनी भयकर यत्रणाएं उठानी पडती है इसका ग्रनुभव मुझे है। ऐसा सभव है कि ग्रभाव मनुष्य को पतन म डाल दे।

लेकिन ।'

ग्रनामिका ने दयाल के पाव पकड लिए। दयाल ग्रपने पावों को छुडा-कर बोला मुझे छुग्रो मत, छुग्रो मत। ग्रनाम को भीतर भेज दो।

कुछ क्षण पश्चात् ग्रनाम पुन दयाल के कमरे म ग्राया। हैंडनोट लिख-कर उसने ढाई सौ रुपये ग्रनाम को दे दिए ग्रौर ग्रनाम ग्रनामिका को धन्य-वाद देकर चल पडा।

रास्ते म जाते हुए वह सोच रहा था यह कठोर प्राणी ग्रनामिका की बात क्या मानता है ? क्या वह ग्रनामिका से प्यार करता है ? क्या इतने स्वार्थी ग्रौर लालुप इन्सान के मन म मानवीय संवेदनाग्रो की लहर दौडती हैं ? क्या वह किसी से प्यार कर सकता है ?

बाबू स्वय आ गए थ इसलिए उनक साथ जाना पडा।'

कोई बात नहा।'

बठा ता सहा। इन्दु ने कुर्सी की ओर सकत किया।

म वठने नही आया, तुम्हे अपने सग ल जाने आया हू।

क्या ?

पहले यह बताओ रणछोड बाबू न तुम्हे क्या तोहफा दिया ?'

उन्होंने ? इन्दु कहती-कहती रुक गई नही बताऊगी, ताहफे की अहमियत मारी जाएगी।

फिर मैं भी तुम्हे बाद म बताऊगा हालाकि मर पास कार नही है इसलिए मर साथ तुम्हे तागे ही म चलना पडेगा।

पर कहा ?

चौद रास्ते तक ?'

यदि नाम को चलें तो तुम्हे कोई एतराज होगा ?

बिलकुल ! उसकी आकृति एकदम बदल गई और वह तुरन्त दरवाजे की ओर घूम गया।

इन्दु अनाम की नाराजगी भाप गई। उसने तुरन्त जाकर उसे रोका और चलने का आश्वासन दिया। अनाम कुछ नही बोला वह इन्दु को जलती निगाहो स देखता रहा। इन्दु न तुरत कपडे बदले और वह अनाम के साथ चल पडी।

गन्तव्य स्थान पर पहुचकर अनाम ने इन्दु स कहा तुम अपने मनपसद की तोहफा खरीद सकती हो। मैं रणछोड बाबू की भाति तुम्हे सोने का ताज-महल नही दे सकता फिर भी तुम्हारी इच्छा को पूर्ण करने की भरसक चेष्टा करूगा। बोलो क्या चाहती हो ?

अप्रत्याशित इन्दु गभीर हो गई। सडक का नया घुमाव आ गया था। वह एक ओर अनाम को लेकर बोली तुम बार-बार रणछोड बाबू का नाम

क्या लिया करते हो ? उनके प्रति तुम्हारी जलन अच्छी नहीं है। उन्होंने हमारा भला ही किया है।

मैंने कब कहा कि उन्होंने हमारा बुरा किया है ? लेकिन किसी कलाकार को इन पूंजीपतियों का पिछलग्गू बनना भी तो शोभा नहीं देता। जरूरत से अधिक महत्व भी ठीक नहीं।

ऐसी तो कोई बात नहीं है।

फिर अकेली उनके साथ क्या गई थी ? जानती हो तुम्हारा उनके साथ इस तरह घूमना किस वातावरण को जन्म दे सकता है ?

ओह ! अब समझी तुम यह कहना चाहते हो कि उनके साथ घूमने पर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे पर इन लोगों ने तो हमारी और तुम्हारी मित्रता पर भी कम कीचड़ नहीं उछाला है ? अनाम ! हमें दुनिया से नहीं डरना चाहिए हमें इस तरह दकियानूस होकर सोचना भी नहीं चाहिए। हम दोनों अच्छे दोस्त हैं हमें जीवन के नये मानदंडों के साथ चलना चाहिए।"

तभी एक एंग्लो इंडियन जोड़ा जोर से बहस करता हुआ उनके पास से गुजरा।

इंदु सावधान होती हुई बोली ओह ! हम भावावेग में स्थान की अनुकूलता को भी भूल बैठे।

बात का प्रसंग बदल गया। अनाम ने तुरन्त पूछा तुम्हें कौन-सी वस्तु पसन्द है।

जो तुम्हारी पसन्द वही मेरी पसन्द।

फिर चले। उन दोनों ने छोटी चौपड़ की ओर प्रस्थान किया। तब वे एक घड़ीसाज की दुकान पर पहुंचे और अनाम ने एक सौ पन्द्रह रुपये में इंदु के लिए एक घड़ी खरीदी।

इसके बाद वे बाग के एक छोर पर बैठकर प्रेम का वार्तालाप करने लगे। अनाम ने जाना कि इंदु वस्तुतः उसे ही प्यार करती है। इस दिन उसने

एक नारी के श्वासों की उष्णता और धड़कनें अत्यन्त ही करीब से महसूस की। वह नगड़ा इन्सान जिसे युवतियां या तो स्वार्थवश ही प्रेम किया करती थी अथवा दया से द्रवित होकर उसपर करुणा की जगह प्रेम के भाव प्रकट किया करती थीं वह एक जवान युवती के स्वाभाविक प्रेम का स्पर्श पाकर धन्य धन्य हो गया। उसे लगा यह पावन प्रेम एक चिरन्तन आलोक बनकर मस्तिष्क में बिखर जाए और उसके जीवन में आनन्द का वर्षण कर दे और एक ऐसे मीठे दर्द की अमिट अनुभूति की रचना कर दे जो उसकी नस-नस में समा जाए।

वे क्षण! जीवन के परम सुख और विनम्र भावनाओं से भरे क्षण! आत्मा की प्रगाढ़ कामनाओं के लिए क्षण! वे क्षण अक्षुण्ण हों, अमर हों!

अनाम के स्मृति-पटल पर उन क्षणों की चिरंतनता के लिए सहस्रों स्वर गूंज पड़े। वह टेबल पर इस तरह निस्पंद पड़ा था जैसे उसमें प्राण ही न हों। मधुर कल्पना में वह भूल गया था कि वह कहां बैठा है।

अकस्मात रणछोड़ बाबू ने उसके विचारों के सागर में कंकड़ फेंका।

किस विचार में खो गए अनाम जी?

आह! किसी में नहीं। अनाम ने मुस्कराने की चेष्टा की।

मेरा विचार है कि पार्टी की कार्यवाही शुरू की जाय। बर्थ डे का सिस्टम हालांकि विदेशी है पर है मजेदार अतः इसका ही आयोजन रख लिया गया है। अब मैं अपना तोहफा भेंट करूंगा अनाम बाबू?"

रणछोड़ बाबू ने हिन्दी का टाइपराइटर उठाकर इन्दु को दिया। इन्दु ने मुस्कराकर उनका अभिवादन किया। रणछोड़ बाबू ने भीड़ को सम्बोधित करके कहा अभी इनके लिए सबसे महत्व की चीज यही है और मैं आशा करूंगा कि आप विश्व की एक महान लेखिका बनें। तब उन्होंने गर्व से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि में एक पूंजीपति का अहम् नाच रहा था।

अपनी बेटी के लिए लगडा पति नही चाहिए ? यदि इन्दु की मा राजी भी हो गई तो वह अपनी बेटी क सग रहगी । उसके जीवन का अधार इन्दु ही है। इन्दु ! अधेरे म इन्दु का चहरा अगारा-सा दीप्त हो उठा । इन्दु उसे कभी भी इन्कार नही करेगी । उन दोनो का एक पथ है उस पथ के लिए प्रत्येक एक दूसरे क लिए सच्चा साथी बन सकेगा। लेकिन उसकी चार बहिन ! सूखे सूखे मुख और धसी धसी आख। जजर खडहर की भाति जिनके शरीर हो गए है । उसकी वे बहिन कगाला की भाति उसके कल्पना लोक म खडी हो गई । वे मुस्कराने का प्रयत्न कर रही है लकिन उनकी मुस्कानें उनके पीले अधरा म बहुत दूर जा चुकी है। उनके कदम इतने दुबल हो गए है कि व हिरणिया की भाति सरपट दौड नही सकता । वे हथिनिया की मतवाली चाल से औरो का मन भी नही मोह सकती। घुटा घुटा सा जीवन ! नीरस और निस्पद !

प्रीत की वे अनुभूति भी नही कर सकती । इस उम्र म जब हर युवती पति या प्रेमी की मनोकामना रखती है तब उसकी बहिन अभावा म चिड चिडी और अकामक हो रही है अथवा उनका मसा शरीर चाय की प्याली और स्वादिष्ट भोजन पर विश्वास की सीमा का उल्लघन करके अपने आप का छला लगा । उनका जीवन बरबाद हो जाएगा । व कलकित होकर मुह छुपाती फिरेंगी और आसरा न पाकर आत्महत्याए कर लगा ।

यह सम्भव है। उसने मन ही मन जोर देकर कहा उसने एसी अभावग्रस्त गरीब युवतियो की कई कहानिया पढी हैं । तब क्या उन कहानिया की नायिकाओ की पुनरावृत्ति उसके अपने घर म होगी ? नहा । वह एसा नही होने देगा पर एसा होगा ही ! सघष बिना कारण नही मिट सकता । वह सोच रहा था कि उसका अहम् और उसके विचार एक नई प्रेरणा और क्रान्ति क प्रतीक है ! क्या भला एक व्यक्ति अपने जीवन क उद्देश्यो और लक्ष्य को छोडकर परिवार क घिनौने वातावरण म अपने आपको सम

करे ? उसने पता पर लम्बर गम्भीरता से विचारना शुरू किया, मैं एक चित्रकार हूं-लेखक हूं। कला मे नई स्थापनाओं और पुरानी परम्पराओं को खत्म करने वाला। मेरी बहिनें क्या नही नौकरी करती ? क्या नहीं कमाती ? उन्हें भी भगवान ने दो हाथ-पाव दिए हैं खोपडी दी है आखें दी हैं फिर क्या वे अपने भाई पर आश्रित रहती हैं जबकि उनका भाई स्वयं लगडा है ?' मा का कहना है कि लडकियां का कमाना उसके कुटुम्ब की मर्यादा के प्रतिकूल है। मैं कौटम्बिक गौरव का लडकियां को नौकरी करवाके नही खाना चाहती। अनाम की आखो के आगे रात के अंधेरे के अतिरिक्त एक तिमिर आवरण और छा गया। उसने अपने आपको धिक्कारा तब उसके आगे एक छोटा-सा पृष्ठ स्वयं खुल पडा। उसकी मा का खत आया था। अभाव का रोना रोते रोते उसने लिखा था,'तुम बडे शहर में क्या चले गए इसको मैं अब समझी हूं। यहां कम से कम तुम मेरी रोटियां का प्रबंध तो कर देते थे लेकिन वहां तुम इससे भी छुट्टी पा गए। आखो के आगे तडपते नग इन्सान का देखकर सबका लज्जा आ जाती है। वह उनके लिए कुछ करता है। तुमने लिखा कि अभी मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। साल में आपको दो सौ भेज चुका हूं। लेकिन तुम्हारे मित्र कहते हैं कि तुम एक महीने का तीन सौ खर्च करते हो। तुमने लिखा कि मैं अधिक नहीं कर सकता मेरा भी जीवन के प्रति एक ध्येय और एक लक्ष्य है कि मैं बहुत बडा चित्रकार बनू नया हर कलाकार को कुछ बनने के लिए त्याग' करना पडता है। यह त्याग शब्द मुझे जचा नही मेरे बच्चे, वस्तुत त्याग एक बहुत बडी चीज है जो दूसरे के सुखो में सम्बन्धित होती है। जरा सोचो यदि तुम्हारा बाप कचहरी में अपना जीवन खोकर तुम्हें इतना नहीं पढाता तो तुम कहा पर साधारण नौकर नही होते ? और तुम्हारे महान बनने के माने सपने ही न बने रहते। इस बात को पढकर अनाम को गुस्सा आया। यह कटु सत्य असह्य-सा उसके मन में ध्वनित प्रतिध्वनित होता रहा। लेकिन

अनाम दो तीन दिन तक गम्भीर और चिंतित रहा बाद म वह महत्वा-
का ी इसान आकाश को स्पर्श करने के प्रयास म पुन सलग्न हो गया।

और आज एक भिखारी की भांति वह दयाल स रुपय उधार लकर
आया। वहिना और परिवार की भूख की दुहाइ दी। ऐसा कुशल अभिनय
किया जस उसक जीवन का सर्वोपरि मुख उसक अपन परिवार का सुख
ह। लेकिन वह प्यास प्राणी की भांति उन रुपयो को प्यार की वदिका पर
लुटा आया। यदि वह नही लुटाता तो इन्दु बुरा महसस करती और उस
सभी हय दृष्टि स देखत विशेषकर रणछोड बाबू !

उसने ईर्ष्यालु व्यक्ति की तरह रणछोड बाबू पर थूका। उसे प्रतीत
हुआ कि रणछोड बाबू उसक प्रतिद्वन्द्वी रूप म आ खडे हुए ह।

यकायक वह विद्रूप की हसी हसा। समीप कोई होता तो वह अनाम
की इस हरकत को पागल की हरकत के सिवाय कोई सज्ञा नहा दता।

उस हसी म उसका अहम झलक रहा था जस वह कह रहा हो कि
रणछोड बाबू इन्दु आपकी नही हो सकती नही हो सकती! वह एक
लेखिका है जिसक हृदय म भावुकता अधिक है। जो एक कलाकार पर ही
मोहित हो सकती है जो उपकार का बदला प्रत्युपकार म ही द सकती है।

फिर उसे लगा कि वह बहुत थक गया ह। उसन अगडाइ ली और सबर
ही रणछोड बाबू स मिलन की सोचकर सोन का प्रयास किया। उसे यह भी
मालूम नहा हुआ कि उस कब गहरी नींद आई।

अनामिका न उस ठीक आठ बज उठाया। आख मलत हुए उसन अना
मिका स कहा मुझ सात बज रणछोड बाबू क यहा जाना था तुमन मुझ
क्यो नही उठाया ?

आप गहरी नींद म सोए हुए थ।

गहरी नींद!

उसन चाय पीत हुए कहा ऐसी गहरी नींद जिसम वह विचित्र सपने

मैं जानता हूँ इसर निए हजारा रुपया की जरूरत है ?'

'मनुष्य चाह ता रुपया का प्रबन्ध कर सकता है।

'आप बड आदमियां का बातें करत हैं जिनक पास अनाप-शनाप रुपया होता है पर मैं एक निरकार लगरा हूँ।

इन्दु ने बात का समाप्त करत हुए कहा व्यय की बाता को छाडिए, चलिए अपनी बात पर आइए।

रणछोड बाबू न तुरन्त कहा इन्दुजी का कहानी-सग्रह 'द्रौपदी का करुण विलाप' तयार है। आपका एलबम कल प्रस म चला जाएगा। इन्दु जी का कहना है कि मैं आपको पाच सौ रुपया एडवास दे दू।

कवल पाच सौ?'

'उससे अधिक मैं नहीं द सकता। हिन्दी म ईमानदारी स इतना भी कोई नहीं देता है। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपका यह एलबम कोई भी छापने को तयार नहीं हुआ था।

'फिर आप क्या छाप रहे हैं? उसने नाराजगी के साथ कहा। वह इस अपमान को नहीं सह सका।

इन्दु न उस शात करत हुए कहा अनाम! बात-बात म उत्तेजित होना अच्छा नहीं। यह व्यापार है इसम धय और समझदारी की जरूरत है।'

अनाम को यह उपदेश सुइया के चुभने जसा लगा। उसने इन्दु की ओर घूरा। इन्दु की आखा म शिकायत थी। एसी शिकायत जिसम उसका प्यार भी होता है।

मैं इसे छापूगा। मेरे सामने लौटाने का प्रश्न ही नहीं है। मुझे आपकी और इन्दु जी की ही पुस्तकें छापनी है। मैं आपकी नई कला को चमकाना चाहता हू। बाद म आपका कहानी सग्रह भी छापूगा।

फिर इन्दु जा जो कह देंगी वह मुझ मजूर होगा।

हुई न बात! रणछोड बाबू मुस्कराए।

इसी बीच एक मोटी स्त्री ने जिसकी कमर ढोल की तरह गोल मटोल थी ड्राइंग रूम म प्रवेश भी किया और वापस चली गई।

इदु की आखें फट गइ। लकिन रणछोड बाबू न बहयाई की हमी के साथ कहा, आप इन्ह नही जानती य मेरी धम-पत्नी हैं। म अभी आया।'

उनके जान ही अनाम ने घणा स मुह बिचकाकर कहा य इनकी धम पत्नी हैं या मम।

इदु ने चुप रहन का सकेत किया।

रणछोड बाबू तुरन्त आ गए और बोले, एक जरूरी काम आ गया था। हा फिर मैं आपको पाच सौ रुपये दूगा पर अभी नही एक माह बा-। क्या अनाम जी, आपको बिना रुपया के कष्ट तो नही होगा ?

अनाम कुछ कहता, इसस पहले ही इदु बात पडी नही रणछोड बाबू अनाम जा का रुपये-पसा की क्या कमी है ? इतने प्रसिद्ध चित्रकार और लेखक हैं कि जहा भी जाएगे रुपया बटोर लाएग।

अनाम अब क्या कहता ? गर्वित स्वर म बोला आप अपनी मर्जी से दे दीजिएगा। चिंता की कोई बात नही।'

फिर यह तय रहा कि मैं आपका यह एलबम कल प्रेस मे दे दू। छपाई और सजावट का सारा काम आपके जिम्मे रहा।

कोई बात नही।

इसक बा- चाय पीकर व दोनो—इदु और अनाम—वहा से चल पडे। गली क पार पहुचत ही अनाम न इदु म शिकायत भरे स्वर म कहा तुम्ह उस सठ के बच्चे की हा म हा नही मिलानी चाहिए तुम्ह उस डाटना चाहिए था वह कला के बारे म क्या जानता है ?

रणछोड बाबू निरे बुद्धू नहीं हैं। इदु ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा उन्ह साहित्य और कला का अच्छा ज्ञान है। व भी तुम्हारी तरह हिन्दी साहित्य का अध्ययन करत हैं।

अनाम वचा है यह साचकर ऊपर की ओर चला। अभी वह ना मात्या नहा चल पाया था कि वरला खिलखिलाकर हस पडी। उसकी हमी म ताव्र व्यग्य था। अनाम उस नही सह सका। उसने पलटकर देखा। वगाला का सतुलन बिगड गया। वह गिरता गिरता बचा। उसकी कुहनी पर खरोंच आ गइ।

तभी वरला रुक रुककर वाली अधिक चाट ता नही आइ अनाम बाबू, महारा दू ?

और वह हसती हुइ उसकी आखा से ओझल हो गई।

भीतर पहुचते-पहुचते अनाम का हृदय भर आया और उसके मन म आया कि वह दूर निजनता म बस जाए जहा उस पर दया करने वाला और व्यग्य करने वाला काइ भी न हा।

ग्यारह

अनाम चार दिन तक किसी से नही मिला। अनामिका उस उसकी उदामा क बारे म बार बार पूछती थी लेकिन अनाम मन ठीक नही कहकर खामाश हा। जाता था। उदासी और एकान्त के जीवन म उसका सोया कवि फिर स जाग उठा। उसने तीन-तीन कविताए लिखी जिनके शीषक बडे विचित्र थ। कीचड म कमल और मैं रात का हृदय चाद का तीर', तारा मरा आचल टूटा चाद। उन कविताआ म उसके मन की हीन भावनाए प्रयोगवादी नय प्रतीकाे और उपमाआ क साथ प्रकट हुई थी। इन सभी के बीच इदु की स्मृति उसके मन पर छायी रही। चार दिन बीत गए। इन्दु उसक यहा नहीं आइ। उसकी खोज-खबर नही ली। उसका अन्तर डाह स भर उठा उसे अब रणछाड बाबू मिल गए ह न ? वह उनक साथ मोटर म सैर करने जाएगी। वह इस गरीब लेखक का क्या मानेगा ?

अनाम के मन म पीडाओ के बादल छा गए। हर क्षण उसे लगा कि बादल फटकर बरस पडेगा और उसके अन्तराल को पीडाओं के सर्पो से भर देगा। उसने घबराहट स अनामिका की ओर देखा। अनामिका पूर्ववत निस्पन्द-सा खडी था। दयाल की आखो म क्रूरता थी। फिर भी अनाम ने अस्फुट शब्द म बडबडाने की कोशिश की दयाल बाबू आप थोडी दर शात रहिए मैं खाना खा लेता हू।

तुम्हे भूख लगती है ?'

क्षण भर के लिए गहरी निस्तब्धता छा गई।

मुझे विश्वास नहा होता कि तुम्ह भूख लगती है या तुम भूख के अस्तित्व का स्वीकार करत हो। तुम्हारे लिए सेक्स दवता है प्रेरणा है जीवन है। लकिन तुम उसको कला क माध्यम या उसके नाम से आनन्द लेना चाहत हो।

अनामिका न बीच म अवरोध उत्पन्न करना चाहा। दयाल न उस रोक दिया।

तुम चुप रहा अना यह भोजन के समय जरा भी प्रतिकूल परिस्थिति नहा चाहता। असीम शाति चाहता है। लेकिन इससे पूछा कि जिनके घर म रोटी नही है हजार परेशानिया है वे रोटी कैसे खात हैं ? यह कलाकार जरूर है लेकिन इसम इसानियत नहीं। यह मुझे और तुम्हे धोखा देकर रुपय ले गया। मैं अपने आपको इसान नहीं मानता मैं सूदखोर हू पर यह इन्सानियत के पुतले इसानियत को खूब पनपाते हैं ? शायद मैं शैतान भी इससे अच्छा हू।

दयाल बाबू ! अनाम चीख पडा।

चीखते क्यो हो ? अना यह मुझसे रुपया मा-बहिन की भूख के नाम पर ले गया और खरीद लाया अपनी प्रेमिका के लिए घडी।

अनामिका स्तब्ध-सी रह गई।

तुमने मुझे विवश किया नमन अनाम की वहिना की दुकान दी। पता नहीं मेरे जैसा पत्थर दिल इन्सान तुम्हारा कहना क्या मान बैठा ? अनो इस चित्रकार ने मुझे धोखा देकर लूट लिया।

मैंने आपका कुछ नहीं हैंडनोट लिखकर रुपया लिया है। अनाम ने शान्त स्वर में कहा।

तुम्हारा हैंडनोट का पाच रुपया भी कोई नहीं देगा। तुम्हारे पास है भी क्या ? तुम कलाकार हो भूखे और गरीब !

देखिए दयाल बाबू आपको सभ्यता के बाहर नहीं होना चाहिए मैं आपकी पाई-पाई दे दूगा। आप दो चार दिन और धैर्य रखिए।

दयाल ने इधर उधर देखा और फिर कहा स्त्री के रूप और यौवन की दीप्ति में चकाचौंध होने वाले आदमी फिर नहीं समझते। तुम्हें घर की जगह उस अध्यापिका की चिंता है। फिर मेरा नम मेरा कर्ज क्या चुका सकते ? तुम्हें इन्दु चाहिए उसको राजी करने के लिए तुम अपना खून भी गिरवी रख सकते हो। छि !

अनाम को गुस्सा आ गया दयाल बाबू हद से बाहर न जाइए मैंने कह दिया कि मैं कल ही आपके रुपए चुका दूगा।

तब तो मुझे बडी प्रसन्नता होगी। लेकिन एक बात इस वकील की भी मानो मेरे मुवक्किल आज की कोई भी चतुर चालू और शिक्षित युवती तुमसे प्यार नहीं कर सकती एक लगोट को जान बूझकर अपना पति कौन बनाएगी ? यहा कला और कलाकारों पर मिटने वाले दिन नहीं हैं।

अनाम को बहुत गुस्सा आया। उसने चाहा कि वह बसाखी से दयाल का सिर फोड दे। इस विचार से वह काप भी उठा। उसने जाते हुए कहा, अब आप यहा मत आइएगा मैं अपने आप आपका रुपया पहुचा दूगा।

दयाल ने घमण्ड से कहा, मैं वकील हू मैं अपना रुपया वसूल करना भी जानता हू।

दयाल चला गया। अनाम खाने की थाली को फेंकते हुए पागलों की तरह चिल्लाया जंगली नीच, कमीना, बदतमीज खाने को जहर बना गया।'

अनामिका उस चित्रलिखित-सी देखती रही।

यह आत्मा नहीं शैतान है। इसकी सारी दौलत का चुराकर लुटा देना चाहिए। वह फिर चिल्लाया।

अनामिका ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बिखरे हुए खाने को एकत्रित करने लगी। वह इतनी शान्त और दुखी थी जैसे वह अब रो पड़ने को आतुर है।

जब अनाम बहुत देर तक बड़बड़ाता रहा और अनामिका ने कोई प्रोत्साहन नहीं दिया तब अनाम उस पर भड़क पड़ा तुम बोलती क्यों नहीं क्या तुम गूंगी हो?'

गूंगे बनने में ही लाभ है अनाम बाबू।

ओह! तुम भी अब सूक्तियों में बोलोगी। साफ क्यों नहीं कहती?'

उसने अपना सिर पकड़ लिया।

अनामिका ने थाली हाथ में लेकर कहा मैं इतनी देर से यही सोच रही थी कि आपने झूठ क्यों बोला? क्या आप कुछ और बहाना नहीं बना सकते थे? क्या आप मुझे सच्ची बात नहीं कह सकते थे?'

मैंने कोई बहाना नहीं बनाया मैंने जो कहा सच कहा। मेरे घर पर भी एक पैसा भी नहीं है। यहां से चिट्ठी भी आई थी।

'फिर आपने अपने परिवार के प्रति यह अन्याय क्यों किया?'

तुम नहीं जानती कि प्यार में आदमी को मजबूरन क्या-क्या करना पड़ता है? यहां प्यार की होड़ लगती है। इस होड़ में मुझे भी कुछ दांव पर लगाना होता है। तुम्हें कम पता लगे कि प्यार में आदमी कितना लाचार और विवश होता है। मैं इंदु को प्यार करता हूं उस पार्टी में मैं कुछ न

देकर उसका और अपना अपमान कैसे करवा सकता था। आखिर मैं अपने आपको उसका निकटतम मित्र मानता हूं। चित्रकार हूं! तुम नहीं जानता कि यह सब क्या होता है।

वह उत्तेजित हो गया था। उसकी आखें नम हो गई थी। अनामिका ने ठंडी आह लेकर कहा, मैं कलंकिनी मा का भूखा और नगा नहीं देख सकती चाहे मुझे आजीवन कुवारी रहना पडे। चाहे मुझे जीवन भर प्यार की प्यास मे तडपना पडे।

बारह

थाडी ही देर म अनाम जरूरत से अधिक शान्त और गभीर हो गया। उसे कुछ सोचना और न सोचना दोनो अजब से लगे। उसको दयाल के लौट जाने के बाद मन-ही मन एक घुटन और अपमान महसूस हो रहा था। धीरे धीरे उसे लगा कि उसके सिर म दर्द हो रहा है। वह पलग पर लेट गया पर अधिक देर तक नही सो सका। दयाल ने उसे लगडा कहा इस बात ने उसपर गहरा असर किया और वह विचलित-सा इधर उधर करवटें लेता रहा।

अनामिका चली गई थी।

उस एकान्त मे वह खिडकी की राह कुहनिया का सम्बल लेकर खडा हो गया। दो सुखी जोडे हसते हुए गुजर रहे थ। उसने क्षण भर के लिए कल्पना की कि वह इसी तरह से इन्दु के साथ जा रहा है। इन्दु मुस्का मुस्काकर उससे बातें कर रही है।

पर लगडे के साथ कौन शादी करेगा? दयाल के य शब्द उसके मन म डर पदा कर रहे थ। अनाम ने अपने को समझाया कि यह बकवास है। इन्दु उसे सच्चे हृदय से चाहती है। वह स्वय इन्दु को हृदय से चाहता

है। लकिन वह चार दिन मे आई क्या नही ? उसने अपने कपडा की ओर देखा जस वह जाने का विचार कर रहा है।

उसने कपडे बदले। वसाखी ली। घर स बाहर चल पडा। चाडी की बाइ ओर एक छोटी बन्द गली पडती थी। उस बन्द गली के सिरे पर वरदा एक कोन युवक स हस हसकर बातें कर रही थी। वह काला लडका देखने म अप्रिय लगता था। उसके गालो की हडिडया उभरी हुई थी। उसने एक मारी धोती और कुता पहन रखा था। उसके बाल घुघराले और घने थे जस हब्शियो के होते हैं।

वरदा पर जसे ही अनाम की दृष्टि पडी वसे ही वह जरा ऊचे स्वर म बोला देखो शकर, आज सध्या वेला तुम मुझे अवश्य बाग म मिलना, उसी जगह जहा हम कल मिले थे। फिर उसने नाक भौं सिकोडा। उसकी हर हरकत म एक उच्छृंखलता थी।

अनाम ने आगे बढते हुए सोचा यह करती रह अपनी वला मे। वह तेजी से कदम बढाने लगा।

कोई रिक्शा उसे नही दीखा। वह फुटपाथ के छोर पर खडा रहा। वहा खडे खडे उसने सोचा कि दयाल बाबू इस भेद को सभी के सामने खोलेंगे। कैसा न हो वह रणछोड बाबू स रुपए लेकर दयाल को दे आए। इस विचार ने उसे सान्त्वना दी। वह रणछोड बाबू स भी परिवार की एक आवश्यकता बनाएगा। ऐसा सोचकर थोडा चिंता से मुक्त हुआ।

रिक्शा आता हुआ दिखाई पडा। उसने अपनी वसाखी को सभाला। रिक्शा तय किया और उसम बठ गया।

जब वह रणछोड बाबू के घर पर पहुचा तब नौकर ने उसे बताया कि वे दफ्तर म है। आप वही पर चले जाए।

वह उसी समय दफ्तर पहुचा।

रणछोड बाबू किसी काम म व्यस्त थ अत उसे थोडी देर प्रतीक्षा गृह

म प्रतीक्षा करनी पडी। वह वहा बठा हुआ प्रभावशाली न शवला ढूंढने लगा ताकि रणछोड बाबू उस टाल नही सक।

आखिर वह समय आ गया जिसकी अनाम का प्रती ा थी। वह रणछाड बाबू की सामन वाली कुर्सी पर बठ गया। रणछाड बाबू उस प्रश्न-भरी दृष्टि स देखत रहे। उनका यह मौन अनाम को रुचिकर नही लगा।

बात यह है । वह कहता कहता चुप हा गया।

'हा-हा कहिए घबराइए नही।

अनाम झप गया। उसक लाख चाहने पर भी रणछाड बाबू उसक मन की घबराहट का भाप गए। तब उसका चहरा पीला पीला सा लगा और उसकी वाणी म अस्थिरता आ गई बात यह है कि मेरे घर से पत्र आया है मेरी बहिन की शादी होने वाली ह मुझ एक हजार रुपया की जरूरत है।

आप घबराते क्या है ? इसम घबराने की बात ही क्या है ? आपकी बहिन की शादी हो रही है आप निर्भीक होकर स्थिति बतलाइए घबराए नही। रणछाड बाबू के स्वर म बडप्पन था और वे इस तरह कह रहे थे जस अनाम एक अनुभवहीन युवक हा।

घबराता कहा हू घर स चिट्ठी आई है। सरोज का विवाह ह। पाच सौ रुपय आप मुझे रायल्टी के हिसाब म अग्रिम दे रह है और पाच सौ और द दीजिए।

मैं आपका पाच सौ इसक अतिरिक्त भी दूगा।

मैं आपका मतलब नही समझा।

मेरे पास अभी दयाल बाबू आए थ। आपक हैड नाट लकर वह रह थे कल अदालत म दावा करगा।

अनाम का चहरा सफद हो गया। उसकी वाणी अवरुद्ध हो गई। उसका रक्त जम गया।

वे आपसे सख्त नाराज हैं। ऐसे प्रेम में सिवाय हानि के और कुछ भी नहीं मिलता। घर वाले रानी रोगी चिल्लाते रहें और आप यहा तोहफे में रुपया उगलते रहें ऐसी झूठी शान से क्या लाभ ?'

अनाम अपराधी की भाति सिर झुकाकर बैठा रहा।

मैंने दयाल को पाच सौ रुपये दे दिए हैं आप इस रसीद पर दस्तखत कर दीजिए रणछोड बाबू ने एक रसीद निकाली और अनाम ने बिना देखे ही उसपर हस्ताक्षर कर दिए।

मैं जा रहा हूं।' अनाम ने उठते हुए कहा।

'क्या चाय नहीं पिएगे ?'

'नहीं।'

'हां सुनिए आज इन्दु जल महल में आएगी आप जरूर आइएगा।'

'हां हां कहकर अनाम वहा से चल पड़ा।

वहा से सीधा वह बाग के एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। शाम तक बैठा रहा। गुमसुम और व्यथित !

शाम के समय वह अपने आपको भुलाने के लिए नीरोज आ गया जहा साहित्यिक कलाकार और पत्रकार एकत्रित होते थे।

उसको देखते ही आशुतोष बोला यार ! तुम बड़े कमीने हो दोस्ती की खिल्ली उड़ाने में तुम्हें क्या मजा मिलता है ?'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठ गया।

नवरंग जो प्रयोगवादी कवि था गंभीर होकर कहने लगा यह इसकी हमेशा की आदत रही है। जिन मित्रो का साथ करेगा उन्हीं को यह अपने चित्रो का टूटना लेखों का विषय बनाएगा, उनकी योग्यता को स्वीकार नहीं करेगा बल्कि उनके सत्य को विकृत करके पेश करेगा। ऐसी भी क्या कला है ?

दार्शनिक सिगरेट का कश खींचकर बोला लेकिन यह तैमूरलग है

होशियार ! कुछ आलोचकों को इसने खूब पटा रखा है।

नवरंग हंसकर बोला, पूंजीवादी मनोवृत्ति को समझना है। जिससे अपनी प्रशंसा करवानी होती है, उसकी यह पहले से ही तारीफ करने लगता है। उसका चित्र वह अपनी विचित्र कला में नहीं बनाता।

पक्का व्यापारी कलाकार है।'

अनाम ने अब मौन तोड़ा, मैं अब भी आपकी बात नहीं समझा। आज आप किस बात पर बाल की खाल निकाल रहे हैं?

लीजिए, आपको जैसे कुछ पता नहीं। चलचित्र के कॉमिक अभिनेता की भांति 'शशिमित्र' बोला, तुम फिल्म में काम कर लो।

'पता हो तो कैसे? भाई इनकी वह इन्दु जी है न, आजकल एक उपन्यास लिख रही है। आप उसी उपन्यास के संशोधन में व्यस्त हैं। नवरंग गर्दन हिलाकर बोला, वह मेज़ पर अंगुलियां भी नचा रहा था। तभी 'शोला साहब ने प्रवेश किया। उर्दू के प्रगतिशील शायर। शराबी। मुंहफट।

इन्दु जी हमसे नाता जोड़ने वाली है, उसे लंगड़ा खाविन्द पसन्द नहीं। जानते हो, वह क्या जिन्दगी का असली मज़ा ले सकता है, जो इश्केहकीकी का मानने वाला हो?'

सब खिलखिलाकर हंस पड़े।

अनाम को गुस्सा आ गया। वह अपनी बसाखी लेकर उठ खड़ा हुआ। तुम साहित्यकार नहीं, जंगली हो। तुम्हारे बीच बैठना भी गुनाह है। अपने आपको अपमान करवाना है।'

वह चल पड़ा।

सड़क पर विचारों में खोया हुआ वह चला जा रहा था। समीप से कौन आ रहा है और कौन जा रहा है, इसका उसे पता ही नहीं था।

अकस्मात किसी ने उसकी पीठ में गाह पकड़ी। उसने रुककर देखा—मनोज था।

एक मठ का बेटा जिसकी मो कई कहानिया अलाम न पहले पहल र्गाधित की थी लेकिन आजकल वह अच्छी कहानिया लिख लिया करता है।

मुझे आज दा मैं एकान चाहता हू।

क्या ?

तुम नहा जानत कि आज का दिन मेरे लिए कितना मनहूस है ! तूफान पर तूफान आ रहे हैं। परेशानी पर परेशानी आ रही हैं। मेरा मन मेरे सभी परिचितो को लेकर शाम से भर गया है। मैं चाहता हू कि यहाँ से दूर बहुत दूर क्षितिज के पार चला जाऊ ! बच्चन की इस कविता—इस पार प्रिय तुम हो मधु है उस पार न जाने क्या होगा ? के विपरीत अब मैं सोचता हू—मुझे लगता है—यहा दुख कटुताए और अपमान के अति रिक्त कुछ भी नहा है। मधु और प्रिय सब बकवास। सब झूठ।

मनोज उसकी ओर धीरे धीरे झुकता हुआ अपनी मोंहा को उठाकर बोला मैं तुम्हे ऐसी ही जगह ले चलता हू जहा बच्चन जी की कविता साकार नजर आएगी।'

कहा।

मरे साथ आओ।

उसने शब्दा पर जोर देकर कहा लेकिन तुम जाओगे कहा ?'

उसने बिल्कुल सच कहा मेरी एक प्रेमिका है उसके पास तुम्हे ले चलता हू।

तुम्हारी प्रेमिका ?

वह एक सुन्दर और स्वस्थ युवती है। तुम उससे मिलकर बडे प्रसन्न होओगे। वह बडी शिक्षिता और समझदार है लेकिन है एक वेश्या। यदि वश वह तुम्हें अन्य लड़कियों म प्रेम करती हुई मिल जाए तो बुरा न मानना। उसके प्यार का आधार हृदय नहीं पैसा है। भावना नहीं व्यापार है। फिर

भी वह अपने आपको मेरी प्रेमिका समझती है। बोलो चलोगे ?

अनाम कुछ देर गंभीरता से मनोज के चेहरे का निरीक्षण करता रहा। मनोज एक चुस्त सैनिक की भांति गर्दन की नसों को तानकर खड़ा हो गया। इस बीच कई आदमी आए और गुज़र गए।

'वहीं इन्दु तुम्हारा इन्तजार तो नहीं कर रही है ?'

'कर ज़रूर रही है पर आज मैं वहां नहीं जाऊंगा। आज मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा।' उसने उदासीनता से कहा।

वे दोनों चार पोर के एक घर में घुसे। पूरा फ्लैट सोनी ने ले रखा था। मनोज ने उसका चुम्बन लेकर उसका स्वागत किया और फिर कमरे में लगे ईसा प्रभु के चित्र से क्षमा-याचना की।

अनाम अपनी बैसाखी को कुर्सी के नीचे खिसकाकर बैठ गया। मनोज ने सोनी का उससे परिचय देते हुए कहा, 'ये प्रसिद्ध चित्रकार हैं। लेखक हैं। ये तुमसे यानी मेरी प्रेमिका से मिलने आए हैं। और मैंने तुम्हारे बारे में इन्हें सब कुछ समझा दिया है।' सोनी ने एक शरारत भरी दृष्टि अनाम पर फेंकी। इसके बाद मनोज सोनी से हंसी मज़ाक करता रहा। अनाम नासमझ बच्चे की तरह उनकी बातों को सुनता रहा। तब मनोज सोनी को लेकर भीतर के कमरे में चला गया।

अनाम को गाना का बात सुई सी चुभ गई थी। उसने कई मित्रों को भी ऐसा ही ख्याल था कि उसमें पुरुषत्व नहीं है। क्या नहीं वह अपना परी [illegible] कर न। इस प्रेमिका के प्रेम का आधार हृदय नहीं, शरीर भावना नहीं व्यापार है। तब ?

मनोज गीत गुनगुनाता हुआ वापस आ गया था।

अनाम के मुख पर पसीना देखकर बोला, 'तुम पानी-पानी क्यों हो रहे हो ?'

'नहीं तो ?'

छपा रह हो।

बात यह ह नि मैं ।

गोद मे।

और मनोज न तुरन्त उस बसाखी पकडवाई और उसकी एक भी न सुनकर उसे मातर क कमरे म ढकेल दिया।

उस आलीशान कमरे म कामोत्तेजक चित्र टग हुए थे। अनाम न सानी की नजर बचा के उन चित्रा पर दृष्टि डाली।

आइए।

वह उसके समीप लजीले किशोर की तरह गदन नीची कर बठ गया।

मनोज न बीच म अवरोध उत्पन्न किया। उसन सकन करके सोनी का बुलाया और काना-ही-काना म कुछ कहा। सानी उसी स्वर म कुछ कहकर मुस्करा भर दी।

सानी न अनाम के हाथा को अपने हाथा म ले लिया। बाली आपकी टाग का क्या हुआ ?'

वह जम स ही ऐसी है।

ओह !

खिडकिया बन्द कर दू ?'

अनाम न कहा हा !

खिडकिया बन्द हो गइ।

पाच ही मिनट के बाद अनाम कापता हुआ कमरे के बाहर निकला।

वह पीडित मनुष्य की तरह था पर उसकी आखा म एक अजीब-सी हलचल थी।

सोनी न उसका जोर स हाथ पकड लिया।

आप लगडे है तो क्या हुआ ? क्या लगडा य बात कह नही हान ?

आप इतनी हीनता का अनुभव न करें। आप बहुत अच्छे पति बन सकते हैं।

अनाम ने सोनी का हाथ प्यार से पकड़कर कहा, अभी मुझे जाने दो, जाने दो, मेरा दिमाग ठीक नहीं है। मैं जीवन में सफल हो जाऊंगा। मैं पुरुष हूं सम्पूर्ण रूप में पुरुष।

आध घंटे के बाद अनाम मनोज को कह रहा था मैं एक क्षण के लिए भी नहीं भूला कि मैं लंगड़ा हूं। मेरी टांग सोनी के सुन्दर मुख के आगे मुझे झूलती हुई-सी लगी और मैं नरवस हो गया। मुझे लगा कि मैं संसार का सबसे अभागा और दुखी प्राणी हूं। लेकिन सोनी के असीम स्नेह ने मुझे बचा लिया। मैं भूल गया कि मैं क्या हूं? मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं लंगड़ा हूं। उसके प्यार की उत्तेजना ने मुझे सब कुछ भुला दिया।

यह व्यर्थ की बात है। ईश्वर की दी हुई सजा को हम वरदान की तरह ग्रहण करनी चाहिए।

वरदान की भांति मैं अभिशाप को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं एक महत्वाकांक्षी प्राणी हूं। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी से अपना सम्मान करवाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे सभी केवल प्रेम की दृष्टि से देखें दया की दृष्टि से नहीं। किन्तु इस टांग की वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ता है। इस टांग का क्षणिक अपमान मुझे वर्षों के सम्मान से अधिक पीड़ाजनक लगता है।

मनोज ने अनाम के दुखी भावों को स्नेह से दुलारते हुए कहा इस टांग को लेकर सभी तुम्हारा अपमान कर सकते हैं पर इन्दु नहीं। इन्दु ने आज तक जो प्रतिष्ठा पाई है, वह तुम्हारे कारण। सुना है कि उसके कहानी संग्रह के प्रकाशन पर यहां की महिला जागृति परिषद् एक समारोह कर रही है जिसकी सभापतित्व यहां के बाद बड़े सेठ दमनलाल मानपाणी कर रहे हैं।

'इन्दु ही मेरी भावनाओं की कद्र करती है। मैं उसके उपन्यास पर इतना महनत करूंगा कि वह निश्चय ही एक श्रेष्ठ कलाकृति होगी।'

तम इन्दु से विवाह क्या नहीं कर लेते ?'

मैं उसे कहना चाहता हूं पर मेरी हिम्मत ही नहीं पडती। उसके उत्तर को लेकर मेरे मन में भय-सा लगा रहता है।'

तुम्हें शीघ्र कहना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। वह समाज में अपनी बहुत प्रतिष्ठा चाहती है। केवल एक यही भावना ही तुम दोनों में समान है।

मेरी भी ऐसी ही इच्छा है मनोज! मैं इतना महान और लोकप्रिय चित्रकार बनना चाहता हूं जिससे लोग मेरी टांग को भूलकर मेरी कृतियों पर मोहित हो जाएं। और इन्दु स्वयं विवाह की इच्छा प्रकट करे।

ऐसा सम्भव है। क्योंकि तुम एक प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार हो पर तुम्हारा लंगड़ा तुम्हारे चित्रकार के सामने मुझे ज्यादा अच्छा नहीं लगता।

रात का गहरा आंचल फैल चुका था।

उठते हुए मनोज ने कहा, घर जाकर आराम करो। अपने मन की हीनता का मारा। बहुत-से व्यक्ति लंगडे-बहरे होते हैं। वे तुम्हारी तरह पीड़ित चिंतित रहकर जीवन को पीडादायक थोड़े ही बनाते हैं? और सोनी को तुम बहुत पसन्द हो।

हां उसने मुझे सचमुच नया सन्तोष दिया है। मैं उसका हृदय से आभारी हूं।

तेरह

तीन दिन बीत गए। अनाम रात के सन्नाटे के संगीत को बड़ी बेचैनी से सुन रहा था। वह दो दिन से निराश विकृत मस्तिष्क वाले प्राणी की तरह जीवन की नश्वरता और व्यर्थता पर विलाप कर रहा था। वह अनामिका को कहता रहा जीवन वृथा है। इन्दु उससे मिलने नहीं आ सकती तब उसके अपने प्राण व्यर्थ हैं अर्थ और सम्मान व्यर्थ हैं। यह कला व्यर्थ है।

यह नारी बड़ी विचित्र है दुर्निवार है।

प्रेम करती है द्वेष करती है और उन दोनों का सामंजस्य लेकर पुरुष को छलती रहती है।

अनाम को एक पत्र मिला था। इन्दु ने कार्य-व्यस्तता के कारण न आने की क्षमा मांगी थी। क्षमा के साथ उसने अनाम को एक ताड़ना भी दी थी वह प्रेम महत्वहीन है जो प्रेयसी के सम्मान को घटा दे। तुम्हारे घर वाले जब मेरे और मेरे तोहफे के बारे में सुनेंगे तब वे क्या विचारेंगे ? वे सोचेंगे कि वह युवती उनके लड़के को पथ विमुख कर रही है। और तुम भी कैसे मनुष्य हो। मानवीय और आत्मीय नाते रिश्तों को भूलकर तुम एक लड़की के पीछे पागल हो रहे हो। प्रेम का ऐसा रूप हमारे परिवारों में शोभनीय नहीं होता। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम मुझे समझने का प्रयास करोगे।

वह उसे समझने का प्रयास करेगा, इस विचार ने उसपर हल्का आघात किया। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि इन्दु उसे इस तरह का उपदेश देगी। स्वयं न मिलकर इस पत्र द्वारा ही उसके गहरे सम्बन्धों में फीकापन लायगी।

अनाम ऐसा नहीं होने देगा।

रात के ढलते तिमिर के साथ वह इन्दु के पास जाएगा। उस सारी

स्थिति के बारे म कहेगा। उसे समझाएगा, आज के युग मे एक प्रेमी किस प्रकार एसे दिखावा मे बच सकता है ? आज हमारे सम्बन्धा के प्रतीका के रूप म य ताहके मटें और पार्टिया बन गई हैं।

एक तारा टूटकर गिरा।

अनाम को लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर आघात हो गया है। उसका मुख पीला गमगीन और उदास हो गया। उसे रह रहकर दयाल पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बख्त ने इस बात का प्रचार प्रसार करके क्या पाया ? दुष्ट है न कष्ट देन म ही उसको आनन्द आता है।

इस तरह बचनी और आशकाओ मे रात बीतन लगी। उसने लाख चाहा पर उस रात उसे एक पल के लिए नीद नही आई। रह रहकर उस ख्याल आता था कि वह इन्दु के बिना तनावा व बेचनियो का पिडमात्र है।

चौदह

क्षितिज के काले भाल पर कोहनूर हीरे के सदृश सूरज की बिन्दी दीप्त हुई।

अनाम तुरन्त दनिक कार्यवाही म निवत्त होकर इन्दु के घर की ओर चला। इतन सवरे-सवरे अनाम को देखकर इन्दु को विस्मय हुआ। वह उसे चाय का एक प्याला देती हुई बोली तुम्हारी आखो म लगता है कि तुम रात भर नही सोए।

तुम्हारा अनुमान ठीक है।

फिर तुम्ह कॉफी पीना चाहिए।

नही मुझे कॉफी की जरूरत नही है। मैं बिलकुल ठीक हू। केवल मुझे एक बात क बारे म तुमसे पूछना है।

कहो।

तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में क्रो
प्रश्न एक साथ उठा जाता है। मुझे पीड़ित कर जाता है मुझे ईर्ष्यालु बन
जाता है मेरे भाव जगत में तूफान उठा सकता है।

इन्दु ने यन्त्रवत् अपना दृष्टि घुमाई तुम्हें आवेग में आकर कुछ नह
कहना चाहिए। हमारे भाव लोक में विशेष एक लोक है वह है हमारे
कर्तव्य-लोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुतले बन रहते हैं
यदि हम स्वयं उतरें व्यवहार में नहीं लाएंगे तब हमारा हर कार्य एक
धोखा बन जाएगा।

लेकिन मैंने अपने वक्तव्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के
उत्तेजित क्षणों में मेरे जैसा आदमी अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपनी चाहने
वाली को उसकी पसन्द की चीज लाकर देगा। यह बिल्कुल स्वाभाविक है।'

रणछोड़ बाबू ने जो कहा उसमें ऐसी कोई बात नहीं झलकती थी।
तुममें एक प्रेमी की ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि रणछोड़ बाबू
मुझे मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं तुमने दयाल से अपनी मा-
बहिन की दुहाई देकर रुपये लिए। यह बिल्कुल गलत बात है। मुझे कतई
पसन्द नहीं।

अनाम हतप्रभ सा इन्दु के कठोर शब्दों को सुनता रहा।

वह अपनी दृष्टि घुमाकर बोली रणछोड़ बाबू ने तुम्हारे हैंडनोट
दयाल बाबू से लेकर मुझे दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार जरा
भी पसन्द नहीं। यदि मेरी इज्जत का सवाल पैदा न होता तो वे दयाल को
एक पैसा भी नहीं देते। उन्होंने मुझसे कहा दयाल कह रहा था कि अनाम
की सारी कमाई इन्दु के घर जाती है। अनाम के घर वाले भूखों मरते हैं
और यह इश्कमिजाजी में बरबाद हो रहा है। अब तुम्हीं बताओ कि एक
लड़की यह सब कैसे सह सकती है? जो कोई इस बात को सुनेगा, वह मेरे
बारे में क्या सोचेगा? तुम्हारे घर वाले मुझ मास्टरनी को एक कुलटा और

छिनाल के अतिरिक्त कुछ समझ ही नहीं।

तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा निराधार है।

मैं ऐसा कहा सोचती हू ? ऐसा तो दूसरे सोचते है और मैं सुनती हू।

अनाम !' उसने थूक निगलकर दु ख से धीरे धीरे कहा 'मैंने तुम्हारे घर सौ रुपए भेज दिए है। भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोगे। इन्दु ऐसी लज्जा नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व लुटा दो।

अनाम को यह बात टूटते सम्बन्धो की शुरुआत लगी।

इन्दु मुझे समझने की कोशिश करो।

मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। मैं तुम्हें एक अच्छे आदमी और श्रेष्ठ कलाकार के रूप में देखना चाहती हू।

इन्दु के इस वाक्य ने बात के सिलसिले को समाप्त कर दिया।

अनाम उठने लगा। इन्दु ने तुरन्त उससे कहा तुम्हें मेरी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इन बातों से हमारे सम्बन्धो में अन्तर नहीं आएगा। और सुनो परसो मेरा स्वागत हाल वाला है। तुम्हें वहा जरूर आना है।

जब अनाम वहा से चला तब उसका मन सुन्न-सा था। उसके मन में घुटन-सी छा गई। वह यो ही इधर उधर की गलियो में घूमता रहा। उसके सारे कपड़े भीगकर गीले हो गए। चलने में उसे तकलीफ होती थी। लेकिन आज उसे आनन्द आ रहा था। कभी कभी उसे भयकर गुस्सा भी आता था कि वह क्या जिन्दा है इस ससार में ? उस जैसे अनाम मनुष्य को जीने का क्या हक नहीं। वह श्रेष्ठ कलाकार है लेकिन यहा कलाकार का कौन सम्मान करता है ? यहा लोग कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते है जो अपने महत्वपूर्ण जीवन को कला की साधना में खराब किया करता है।

वह इसी तरह सोचता विचारता मनोज के घर पहुच गया। मनोज

सारस का चटर्जीज लवर पढ रहा था। उसकी बैसाखी की खट-खट' सुनकर वह बिना देखे ही बोला आओ अनाम आज बेवक्त कैसे आ गए ?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुह उतरा हुआ था तथा उसकी आंखो में व्यथा की चिनगारियां चमक रही थी।

बात क्या है ? उसने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन औरतो के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?

प्रश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह अनाम के चेहरे पर अपनी दृष्टि गाडकर बोला यह आज ही तुमने एटम का प्रयोग कर लिया।

और आदमी यदि लगडा और गरीब हो ? उसके पास परिवार हो तो उसे क्या करना चाहिए ? वह उत्तेजित होकर बोला।

एटम के बाद हाइड्रोजन का विस्फोट ! दोस्त मैं जरा अभी मस्ती के मूड में हूं। इस चक्कर में पडना नहीं चाहता।

तब फिर बात हो न, दूसरा कोई ... में तुम क्या पडा ! ?

मनोज की मुद्रा गम्भीर हो गई। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने अनाम की आंखों के अवसाद और करुणा को समझ लिया। वह प्यार से बोला औरत सिर्फ औरत है। वह प्यार करती है माता की तरह वह घृणा करती है निष्ठुरता की तरह। वह स्नेह देती है बहन की तरह और उपेक्षा करती है तुम्हारी ... की तरह। वह मनका की तरह मजबूर और नारद बाबू की कमर की तरह स्वतन्त्र है। कहने का तात्पर्य यह है कि औरत सिर्फ औरत है।

उसकी बातें बन्द होते ही अनाम ने पूछा ... की तरह उपेक्षा ?

'... तुम्हें प्यार करता है मेरा यह अनुमान गलत निकला। वह ...

महत्वाकांक्षिणी युवती है। उसका लक्ष्य जीवन म श्रेष्ठ पद पाने का है। वह बगस्वार्थी और चतुर है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि तुमसे सम्पर्क होने स उसकी रचनाए मशाधित हो होकर अच्छे से अच्छे पत्रों म छप सकती हैं। इसलिए तुम्हें अपना दास बनाया। लेकिन वह एक लगडे को अपना जीवन-माथी नहीं बना सकती।

यह तुम्हारे मन की घृणा बोल रही है। वह तुमसे बातचीत नहीं करती है इसस तुम उसके बारे म एसी बात कहते हो।'

मैं बकता नहीं हूँ ठीक कहता हूँ। आजकल वह रणछोड बाबू के साथ माटर म घूमती है। उसका सम्मान होने वाला है, उसमे बड़े-बड़े आदमी आयेंगे। तब मैं देखूंगा कि इन्दु तुम्हें हाथ पकडकर अपने पास बिठाती है या नहीं?

वह मुझे प्यार करती है। यह वाक्य उसने जब बडे आत्मविश्वास से कहा तब उसके हृदय पर मुक्का सा लगा। जैसे उसने अपने आपको जबरदस्ती यह विश्वास दिलाया हो।

पन्द्रह

सौ रुपया की पहुंच की चिट्ठी आई थी। मा ने अति स्नेहपूरित शब्दों मे उसको आशीष दिया था। उसकी चिट्ठी म उसकी आन्तरिक मार्मिकता फूट फूट पड रही थी। उसने मानव की सौगन्ध दिलाकर लिखा था तुम्हारी छोटी बहिन कई दिनों से बिस्तर पर पडी हुई है। उस टट न निमा निया हो गया था। वह इतनी दुबल और कुरूप हो गई है जसी प्रेत छायाए। शरीर सूखकर कांटा हो गया। उसकी दीप्तिमयी आंखें केवल गड्ढों के रूप म रह गई हैं। प्रनाम! तुम्हारे द्वारा रुपये मिलने पर मैं उसके प्राणों को बचाने म समर्थ हो गई हूँ। तुम्हारे रुपये पाकर मुझे लगा

कि तुम्हारा हृदय अत्यन्त निर्मल और पवित्र हो गया है। तब तुम्हारा मुख आदमी बसाखा पर नवजात शिशु की पवित्रतम भावनाएं लेकर मेरे सम्मुख नाच उठा। तुम इतने रुपये हर माह भेजते रहो तो मैं इन्हें पर्याप्त समझकर एक स्वाभिमानिनी का जीवन बिता सकूंगी और तकाजा द्वारा उत्पन्न मार्मिक यन्त्रणाओं से बच सकूंगी।

एक बात मैंने और सुनी है। वह बात तुम्हें अप्रिय लग सकती है पर वह बात मुझे अधिक यातनामय लगती। मित्र का नाम नहीं बताऊंगी लेकिन वह कभी झूठ नहीं बोलता। उसने लिखा है कि तुमने एक मास्टरनी को अपनी जीवन साथी के रूप में चुना है। कदाचित तुम्हें इन मास्टरनियों के जीवन चरित्र का ज्ञान नहीं है। ये चरित्र की भ्रष्ट और स्वभाव की उच्छृंखल होती है। अभिनय में कुशल और प्रकृति की क्रूर होती है। यदि ऐसा न होता तो वह तुम्हारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा आमोद प्रमोद में तथा सैर सपाटे में खर्च नहीं करवाती। मैं उसे कठोर स्वभाव वाली और निर्दयी भी कहूंगी क्योंकि वह तुम्हारे घर की दशा से परिचित होकर भी तुम्हें अपने कुटुम्ब के प्रति उत्तरदायी बनने को नहीं कहती। ऐसी युवती को तुम गृह-लक्ष्मी बनाकर सुख से नहीं रह सकोगे। वह एक सभ्रान्त कुल की होनी चाहिए। उसके मुख पर गरिमामय सुकुमारता और उज्ज्वलता होनी चाहिए ताकि भूख और प्यास में भी उसके होठों पर जीवन भरी शाश्वत मुस्कान नाचती रहे।

मां का यह पत्र उसे उत्तेजित करने के लिए पर्याप्त था। इन्दु के बारे में मां के जो विचार थे वे बहुत निम्न और ओछी प्रकृति के द्योतक थे। इन्दु एक सभ्रान्त और श्रेष्ठ मृदुल स्वभाव वाली है। उसने स्वयं मुझसे बिना पूछे ही मेरी मां को रुपये भेजे। यह उसकी श्रेष्ठता का प्रमाण है।

फिर उसके मस्तिष्क के मंच पर एक माता जैसी उदास आकृति खड़ी हो गई। जिसका चेहरा दारुण दुःख के कारण विकृत हो गया था। जो एक

मिश्रा ने कहकर उसकी कहानियों की जगह-जगह चर्चा कराई, इसका फल उसने उसे इस अपमान के साथ दिया। उसकी इच्छा हुई कि वह रो पड़े।

उसने इन्दु की एक बार पुस्तक को फिर खोला और समर्पण वाला पृष्ठ पढ़ा—आदरणीय श्री रणछोड़ दास जी को जो साहित्य के प्रेमी और पोषक हैं।

और जब अनाम ने कुछ दिन पहले उसे पूछा था, तब उसने कितने आदरपूर्ण स्वर में कहा था कि वह अपनी पहली कृति उसे ही प्यार के साथ भेंट करेगी। फिर इन्दु ने ऐसा क्या किया? उसके सामने ऐसी मजबूरी क्या आ गई?

तभी एक सज्जन ने कहा मिनिस्टर साहब आ गए हैं। भीड़ में क्षण भर के लिए हल्का कोलाहल उठा जो बाद में गहरी शांति में बदल गया। सभापति और प्रधान अतिथि ने अपने आसन करतल ध्वनि के बीच ग्रहण किए। स्वागत मंत्रिणी विद्यावती के भाषण के बाद स्थानीय साहित्यकारों के भाषण हुए। अपने भाषण में अनाम ने इन्दु की बहुत प्रशंसा की। हालांकि आज वह इन्दु से सख्त नाराज़ था लेकिन वह इन्दु की सार्वजनिक आलोचना करना नहीं चाहता था। ऐसा करने में उसे डर था कि इन्दु उससे सदा के लिए बिगड़ सकती है। उसने अत्यंत विनम्र शब्दों में इन्दु की प्रशंसा करते हुए कहा, श्रीमती होमवती देवी, उषा मिश्रा, विमला लूथरा, चन्द्र-किरण सौनरिक्सा तथा मालती परूलकर के बाद कुमारी इन्दु (वह क्षण भर रुका और उसने मन-ही-मन उसे मेरी प्रिय इन्दु कहा) ने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा जो साहित्य-सृजन करना प्रारंभ किया है उसमें नारी-मन की भूमि की यथार्थ अनुभूति का चित्रण हुआ है। उनकी कला नारी जीवन का एक प्रेरणा पुंज लिए हुए है। इन्हीं की दृष्टि से मैं इन्हें सभी लेखिकाओं में अग्रणी मानता हूँ। मैं शुभकामना करता हूँ कि वे इसी भाँति निरंतर साहित्य रचना करती रहेंगी।

इन्दु ने अपनी सहेलियों से विदा मांगी। उसे इस व्यस्तता में अनाम का ख्याल तक नहीं आया। अनाम उसी कोने में खड़ा हुआ इन्दु के आग्रह की प्रतीक्षा कर रहा था और मन ही मन वह प्रशंसा से इन्दु में उत्पन्न मिथ्याचरण के बारे में एक मनोवैज्ञानिक की तरह विवेचन कर रहा था।

वह चला। उसने अनाम को नहीं देखा। अनाम घृणा से फुफकार कर मौन स्वर में चीखा जी तो चाहता है कि इस घमण्डी को यहां पर फटकारूं और उसे याद दिलाऊं कि तू आज जो है वह मेरे बूते से है। पर उसने आवेश में अपना विवेक नहीं छोड़ा। उसे ख्याल आया कि उसका तनिक सा आवेश में बाहर हो जाना, उसके और उसके प्रेम के लिए सर्वथा घातक हो सकता है। उसने अपने आंसुओं के सोतों को छुपाने के लिए अपनी जेब में काला चश्मा निकालकर लगा लिया। अपनी बैसाखी को बगल में दबा कर वह चला। महिला जागृति परिषद की कुछ सदस्याएं अभी तक सामान समेट रही थीं। बैसाखी की खट-खट सुनकर वह व्यंग्यभरी दृष्टि से अनाम को देखने लगीं। अनाम उनकी आंखों की भाषा पढ़ गया। और उसने इतनी जल्दी कदम उठाए जितना एक साधारण आदमी सहजता से नहीं उठा सकता।

सीढ़ियों के बीच में ही इन्दु मिल गई। वह प्रेमपूर्वक हल्की ताड़ना से बोली कहां रुक गए थे? मैं तुम्हारा इन्तजार करती-करती थक गई?

क्या? उसने बिल्कुल अनिच्छा से कहा।

वाह! साहित्यिक संगम के मंत्री के घर खाना खाने नहीं चलना है? रामनाथ बाबू खाना रखे हुए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मुझे माफ करो।

क्यों?

मुझे मेरे मित्र के घर जाना है।

ऐसा नहीं हो सकता।

देखो, मुझे मजबूर न करो।

'पहले तुम अपना चश्मा हटाओ।' कहकर इन्दु ने अनाम का चश्मा अपने हाथ में ले लिया अब वहां मैं नहीं चलूंगा।

अनाम ने अपनी दृष्टि को दीवार पर जमाकर कहा, मैं नहीं जाऊंगा।

पर क्यों? क्या मुझसे कोई गलती हुई?

नहीं।

फिर तुम मेरा अपमान क्यों कर रहे हो? चलो न अनाम?' उसका स्वर अति कोमल और मधुर हो गया। अनाम ने उसकी बड़ी बड़ी आंखों में देखा प्यार भरा आग्रह। अनाम गहरी सांस लेकर बोला, चलो।

सत्रह

अनामिका के मन में अनाम के प्रति पूर्ववत आदर और सम्मान नहीं रहा। अब वह पूर्णतया सयत होकर यत्रतत्र अपने कार्य करती थी और उसी बात का उत्तर दिया करती थी जो उससे पूछी जाती थी। अनाम की अपने परिवार के प्रति उपेक्षा अनामिका को पसन्द नहीं आई। वह प्रायः अनाम को देखकर स्पन्दनहीन सा हो जाती थी और उसके नारी-सुलभ हृदय पर त्रास की रेखाएं छा जाती थीं।

अनाम का प्रेम उस प्रेम न लगकर एक वासना लगी एक उद्दाम आवेग लगा जो यौवन में प्रत्येक तरुण हृदय में आ जाता है। वह सोचा करती थी निस्सन्देह वह पुरुष प्रकृति का एक आवेग हो हो सकता है वर्ना स्नेह प्यार और मानवीय भावनाओं को अन्तस में छुपाए यह कलाकार अपने परिवार वालों के प्रति इतना क्रूर हो गया! जो हर माह होटलों में चाय-नाश्ते के दस-बीस रुपये खर्च कर सकता है वह अपनी बहिन की बीमारी में पत्थर कैसे बन सकता है?

अनामिका का यह सब पसन्द नही। वह अपनी मा का क्षण भर के लिए भी नाराज नहीं कर सकती। जब कि उसकी मा एक पापात्मा व कलंकिनी के अवतार बनी है। मा के हृदय को परखने वाली अनामिका की अभ्यस्त आंखें अब यह भी समझने लगी हैं कि मा को यह प्रश्न पूछना कि मेरा बाप कौन है, बड़ा कष्टदायक लगता है इसलिए आजकल उसने मौन धारण कर रखा है। इस पर भी वह मा को क्षण भर के लिए दुखी नही देख सकती। वह स्वय मिट सकती है—मा की एक आह पर।

अनाम उसकी प्रकृति के नितान्त विपरीत है अत उसे वह पसन्द नही। कई बार उसने काम छोड़ना चाहा पर दयाल बाबू ने ऐसा नही करने दिया।

आज काय समाप्त करके वह जैसे ही जाने लगी कि अनाम ने लिखे हुए खत देकर कहा इन्हे लेटर-बाक्स में डालती जाना और यदि नीचे बरदा हो तो ऊपर भेज देना।

अनामिका 'हां' कहकर चली गई।

वरदा की मा से बात किए हुए आज तीन दिन हुए थे। उस आयोजन में इन्दु के प्रति उसके मन में कुछ ऐसे भाव उत्पन्न हुए जिन्होंने उसे चाह कर भी इन्दु के पास नही जाने दिया। इन्दु ने एक बार कहलवाया भी था लेकिन उसने व्यस्तता का बहाना बना लिया।

आज उसे अपना मन खाली-खाली लगा। कई रोज से उसने खतो के जवाब नहीं लिखे थे इसलिए उसने एक साथ कई पत्र लिखे और फिर वरदा से बातचीत करने की सोची।

वरदा उसके कमरे में आई है। उसकी गर्दन अकड़ी हुई थी और उसने अपनी साड़ी का छोर कमर के चारो ओर लपेटकर बांध रखा था। वह चुपचाप आकर अनाम के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और पुस्तक के पृष्ठ पलटने लगी।

अनाम ने व्यंग्यमिश्रित स्वर में कहा, पढ़ना भी जानती हो?

आपसे ज्यादा।

वह चुप हो गया।

'गुस्सा बहुत आता है।'

जा।

पर मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर तुम्हें देना ही होगा। तुम्हारी मां मेरे पास आई थी।

मैं इस सम्बन्ध में कुछ भी सुनना नहीं चाहती। मैं उस युवक को चाहती हूं। प्यार करती हूं।

एक दिन तुम मुझसे भी प्यार करती थी। तुमने कहा था कि मैं केवल 'आपकी हूं।'

लेकिन अब मैं आपसे घृणा करती हूं।

वह उपदेशक की तरह बोला, सुनो वरना तुम्हें जरा सोचना चाहिए। मां-बाप का हम पर बड़ा अहसान होता है, ऋण होता है, उपकार होता है। हमें उनकी बात को समझना चाहिए।

मैं हर बात को समझती हूं। मां हठ क्यों करती है। वह मेरा विवाह परितोष से क्यों नहीं कर देती?

वह एक अपरिचित के साथ अपनी बेटी का हाथ कैसे दे सकती है। फिर उसका घर बाहर भी देखना होता है।

वह एक कारखाने में मजदूर है। साठ रुपया लाता है।

केवल साठ रुपया?

हां साठ रुपया वाला प्राणी ही मुझे प्यार कर सकता है। हजार रुपये कमाने वाले को मैं क्या पसन्द आऊंगी? वह अप्सरा नहीं ढूंढेगा? एक सुन्दर-स्वस्थ बेटा मुझे तो आप भी प्यार नहीं कर सकते।

तुम मेरी बात के मर्म को नहीं समझीं? उसका स्वर ठण्डा पड़ गया। वह परामर्श देता हुआ कहने लगा, तुम्हारे बाबा (पिता) अच्छे वर

सभा मे कई साहित्यकारो ने अपनी अपनी रचनाए सुनाइ। इन्दु ने अपनी नई कहानी सम्मान की भूख सुनाई जिसका विषय प्रच्छन्न रूप से अनाम पर व्यग्य करना ही था। अनाम को बहुत बुरा लगा और उसने उसी समय मन ही मन निश्चय किया कि वह शीघ्र ही उस चित्र को छपाकर उसकी मनो दशा का सही चित्रण प्रस्तुत करेगा।

सभा की समाप्ति के बाद अनाम ने इन्दु से कुछ बातचीत करने के लिए समय मागा। रणछोड बाबू ने बीच म अवरोध उत्पन्न करके कहा नहीं अभी आप मेरे घर खाना खाने चलगी।

अनाम को इस उत्तर से आघात लगा। इन्दु उसको समझाती हुई बोली मैं अभी खाना खाकर आती हू। तुम मिष्टान्न भडार म मेरी प्रतीक्षा करना।

इन्दु लपककर चली गई।

मनोज ने समीप आकर कहा बधु चिडिया हाथ से गई। अब क्या हाथ मल रहे हो?

अनाम ने जलती दृष्टि से उसे देखा और बिना प्रत्युत्तर दिए वहा से चल पड़ा। एकान्त म आकर वह बैठ गया। सोचने लगा इन्दु क्या बदल गई है! मैंने उसका कौन-सा अपराध किया है! वह नहीं जानती कि मैं उसे कितना प्यार करता हू? उसके स्मृति पटल पर दिवस की बीकवर माफ पिरा की नायिका घूम गई। वह उस मन्दिर के प्रेम म उन्मत्त थी और वह कायर मन्दिर कभी उससे दूर-दूर भागता था और कभी नजदीक आता था। केवल कल्पनाजनित बधन! नहीं इन्दु मुझे प्यार करती है। उसने समाज म जो प्रतिष्ठा और मान पाया है वह मेरी बदौलत। उसकी सभी सुन्दर कहानियां मेरे नाम से मैंने लिखी हैं। विशेष रूप से उसके सग्रह की जिन कहानियों की चर्चा हो रही है वे सभी मेरी हैं मेरी! और आज वह मुझे छोड़कर अपने रणछोड़ बाबू मानसिंह, राधाकृष्ण

अनाम क कुछ कहने के पूव ही न्दु पुन बाली मुझ साहित्य से हार्दिक लगाव नहा ह। वह मरी एक हागी है। तुम्हारी सगति से वह मेरे जावन का लक्ष्य बनन लगा है, जिस म आज फिर उसी हट म लाकर छाड रही ह।

ऽसके बाद व दाना चुपचाप बठे रहे।

अनाम आवग भर स्वर म बोला तुमने मरे साथ विश्वासघात किया। पहल क्या नहा कहा कि तुम वह नही हो जो मैं समझ रहा हू। तुमम स्वाथ की इतनी घणित मनावत्ति हागी इसका मुझे स्वप्न म भी खयाल नहा था। क्या तुम जीवन भर विवाह नही करागी ?'

यह मैं अभी कसे कह सकती हू लेकिन मैं तुमसे विवाह नहा करूगी यह मरा अन्तिम निणय ह।

लकिन क्या ?

हर स्त्री अपने परिवार म प्रतिष्ठा की कामना रखती है और तुम्हारे घर वाल ता अभी से मुझे वश्या कहन लग हैं।

जब व दाना वहा से चले तब दोना प्याला की चाय पड़े की हवा स काप रही थी। किसी ने भी चाय हाठा से नही लगाई। दाना गहरे तनावा म घिरे थ।

उन्नीस

अनाम न्दु को अपन हृदय पटल से नही मिटा सका। इन्दु ने स्थिति का स्पष्ट कर दिया था किन्तु अनाम का उसपर विश्वास नही हुआ। उसे लगा कि यह उसकी मूल मा क पत्र की प्रतिक्रिया है। यह सब आवेग म कहा गया किसी त्रास पाई युवती का प्रलाप है। इसपर अ तमन म विश्वास

आदमी बसाखी पर
नाची। उसे बीमार बाप की खासी सुनाई पडी। मा का दु खो से भरा
जजर शरीर दिखा। वह काप उठा उसे लगा, इन दु खो का जिम्मेवार
है केवल वह।

काफी देर तक वह सघष म पडा रहा। तब वह दयाल के पास गया
उससे कुछ रुपये उधार लिए। दयाल ने हसकर कहा अब तुम पक्के
कलाकार बन हो। देखो मेरे रुपये वायदे के अनुसार लौटा देना अन्यथा म
भूत की तरह तुम्हारे पास आ पहुचूगा।

अनाम निरुत्तर रहा।

तुम्हारी इन्दु शीघ्र ही महारानी बनगी राधाकृष्ण महाराज की
हृदय सम्राज्ञी। वह एक बडौल हसी हसा।

अनाम ने कोई उत्तर नही दिया।

बेचारी अन्नो का हिसाब कर देना उस मेरा ब्याज देना है। भूलना
मत। दयाल फिर एक निरथक हसी हसा।

हैण्डनोट पर दस्तखत करके अनाम घर आया और अनामिका को कहा
वह उसका सामान बाध दे वह घर जा रहा है। जितना फर्नीचर है उस
वह स्वय ले जाए और पैसा बचाकर वह अपना रुपया अलग कर ले।

अपनी मा को इस अभागी का प्रणाम कहना। मैंने कभी-कभी
आपको उपालम्भ दिए थे इससे आपको हार्दिक कष्ट पहुचा होगा। अनामिका
ने करुण स्वर म कहा। उसकी आखें भर आई।

नही अन्नो मनुष्य को अपनी जिम्मेवारियो से नही भागना चाहिए।
यह पलायन वस्तुत एक छल है। मैंने जिसे चाहा वह मुझे नहीं मिला।
और इन्दु?

'वह भी मुझे नहीं मिला मैं उसके योग्य नही हू। भगोडा हू।
था। इस भगोडेपन को भुलाने के लिए मैंने मदिरा भी पी लिया लेकिन यह
सत्य निमम रूप से दूसरा को याद रहा। अन्नो! तुमने मुझसे बढ

उसकी श्राखा के श्राग श्रनाम की मूर्ति थी एक बैंस
वाला युवक । प्यासा श्रौर दुखी ।

खट-खट खट की वहा चिर परिचित ध्वनि ।।

उसने भावावेश म चाहा कि वह दौडकर उस ध्व
की धडकना म श्रात्मसात कर ले । इस पवित्र विचार
म नया जोश भर गया श्रौर उसका हृदय नय श्रालार
उस लगा उसके पथ की वशी बज उठी है श्रौर प्रत्यक
निर्दोष फूल की तरह महक रहा है । श्रौर वह पीछ म
गयी ।